संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ फरवरी २०१०
वर्ष : १९ अंक : ८
(निरंतर अंक : २०६)

महाशिवरात्रि
१२ फरवरी २०१०

जैसे पुजारी ब्राह्मण लोग अथवा भक्तगण भगवान शिव को पंचामृत चढ़ाते हैं, ऐसे ही आप पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश - इन पंचभूतों से बने हुए पंचभौतिक पदार्थों का आत्मशिव की प्रसन्नता के लिए सदुपयोग करें और सदाचार से जीयें तो आपकी मति सत्-चित्-आनंदस्वरूप शिव का साक्षात्कार करने में सफल हो जायेगी।

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

ज्योत-से-ज्योत जगाओ अभियान

गुरुपूर्णिमा २००९ से उत्तरायण २०१० तक १०८ बाल संस्कार केन्द्र खुलवाने वाली समितियों के संस्कार सेवा प्रभारियों को पूज्यश्री के करकमलों से स्वर्ण पदक प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

नासिक (महा.)

जैतारण (राज.)

खुशहालपुर (राज.)

दिल्ली

गुरुपूर्णिमा २०१० तक यह अभियान जारी है। जिसमें नया बाल संस्कार केन्द्र पंजीकरण करवाने पर पूज्यश्री का यह मनोहर श्रीचित्र तथा प्रचार सामग्री भी प्रसाद रूप में भेजी जायेगी।

- बाल संस्कार मुख्यालय, अहमदाबाद

१४ फरवरी के दिन अपने घर, बाल संस्कार केन्द्र, नजदीकी विद्यालयों में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनायें। नयी पुस्तिका 'मातृ-पितृ पूजन' विद्यार्थियों एवं युवाओं तक पहुँचाने की दिव्य सेवा भी कर सकते हैं।

हरदा (म.प्र.) के लोगों ने पूज्य बापूजी के सत्संग द्वारा जीवन को मधुमय बनाने की कुंजियाँ पायीं।

अपलक नेत्रों से गुरुवर की सुंदर छवि को निहारती खिलचीपुर (म.प्र.) की जनमेदिनी।

ऋषि प्रसाद
मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : ८
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०६)
१ फरवरी २०१० मूल्य : रु. ६-००
फाल्गुन मास वि.सं. २०६६

स्वामी : महिला उत्थान ट्रस्ट
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : महिला उत्थान ट्रस्ट, यू-१४, स्वस्तिक प्लाजा, नवरंगपुरा, सरदार पटेल पुतले के पास, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में
(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक : रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

इस अंक में...

कहीं देर न हो जाय...

- पूज्य बापूजी

मगध नरेश अपनी अश्वशाला और वृषभशाला का बहुत अधिक ध्यान रखता था । वह अपने बलिष्ठ घोड़ों और पुष्ट बैलों को देखने जाता, उनको सहलाता । उसकी वृषभशाला में एक अत्यंत सुंदर बैल था । उसका सफेद रंग, लम्बे सींग और ऊँचा कंधा किसीका भी ध्यान खींच लेता था । मगध नरेश भी उसे बहुत पसंद करता था ।

एक बार नरेश राज्य-विस्तार करने दूर देश में चला गया । जब वापस आया तो अपने प्यारे वृषभ को देखने वृषभशाला में गया । उसे देखा तो नरेश दंग रह गया । उसने वृषभशाला सँभालनेवाले वयोवृद्ध सेवक से पूछा : ''जिसका सुगठित शरीर, उज्ज्वल वर्ण, ऊँचा कंधा था, उसी वृषभ का कंधा झूल रहा है, वर्ण निस्तेज हो गया है, जवानी लुढ़क गयी है । आकर्षण का केन्द्र वृषभ इतना दीन-हीन और तुच्छ क्यों हुआ ?''

सेवक बोला : ''राजासाहब ! इसकी जवानी चली गयी । बुढ़ापे में प्रायः सभी प्राणियों की यह दशा होती है और फिर मौत घेर लेती है । यही दृश्यमान जगत की नश्वरता और तुच्छता समझकर आप सरीखे विचारवान, बुद्धिमान राजा सत्संग का सहारा लेकर सत्यस्वरूप में, शाश्वत स्वरूप में जगे हुए महापुरुषों की शरण में आत्मस्वरूप में जगने के लिए जाते हैं ।''

मगध नरेश रात भर इन्हीं विचारों में खोया रहा । मानो राजा के सोये हुए वैराग्य को जगा दिया वृषभ के बुढ़ापे ने और वृषभशाला के अनुभवी सेवक के आप्तवचनों ने । राजा सोचने लगा, 'हाय जगत ! तेरी नश्वरता, परिवर्तनशीलता ! तुझे अपना-अपना माननेवाले सब मर-मिटे । तूने किसीका साथ नहीं निभाया । तू स्वयं नाशवान है । तुझे पाकर जो अपने को भाग्यशाली मानते हैं, वे मूढ़मति स्वप्न के सिंहासन पर शाश्वत अधिकार और शाश्वत सुख की कल्पना में खोये रहते हैं और मृत्यु आकर सबको मिटाती जाती है । मैं भी उसी भ्रम की परिस्थिति में अपना अमूल्य जीवन खो रहा हूँ ।

मिली हुई चीज छूट जायेगी यह सत्संग में सुना था लेकिन मुझ अधम की राज्य-विस्तार की वासना के कारण मैं भटकता रहा । विस्तार-विस्तार में आयु नष्ट हो रही है । यह सुंदर, सुहावना प्यारा वृषभ बुढ़ापे की चपेट में आ गया । राज्य, वस्तुएँ और सत्ता के विस्तार में लगे मुझ जैसे अधमों को धिक्कार है !

हाय मेरी वासना ! जो पूर्ण विस्तृत है उस व्यापक परमेश्वर के पूर्ण विस्तार में जो पूर्ण हो जाते हैं, धन्य हैं वे महापुरुष ! हम प्रकृति की चीजों के विस्तार-विस्तार में नीच योनियों में भटकने के रास्ते जा रहे हैं, जैसे राजा अज, राजा नृग ऐसी वासना में लगकर नीच योनियों में भटके । मैंने भी नासमझी की, नीच योनियों में भटकने का रास्ता पकड़ा ।

नहीं... ! अभी नहीं तो कभी नहीं !! बाह्य विस्तार विनाश की ओर ले जाता है, आत्मवस्तु में चित्तवृत्ति का विस्तार स्वतःसिद्ध, विस्तृत ब्रह्म में विश्रांति दिलाता है । ऐसे दिन कब आयेंगे कि मैं स्वतःसिद्ध, विस्तृत ब्रह्म में विश्रांति पाऊँगा ?

हाय ! मुझे अनित्य शरीर, अनित्य संसार को जाननेवाले अपने नित्य नारायणस्वरूप 'मैं' को, जो नर-नारी का अयन है उस आत्मा को जानना चाहिए, पाना चाहिए । देर हो गयी देर ! बुढ़ापा तो इस शरीर पर भी उतर रहा है । बुढ़ापे की लाचारी, मोहताजी और मौत से पहले ही मुझे परमात्मपद को पाना चाहिए ।'

बुद्धिमान मगध नरेश मौत के पहले अमर

आत्मा का अनुभव करनेवाले सत्पुरुषों के रास्ते चल पड़ा। राजपाट सज्जनों के हवाले करके एकांत अरण्य में सद्गुरु की सीख के अनुसार अपने सत्-चित्-आनंदस्वरूप को पाने में तत्परता से लग गया। धन्य है वह घड़ी जब बूढ़े बैल को देख बुढ़ापा और मौत की याद आयी और राजा अपने अनामय स्वरूप को, अपने अमर आत्मा को पाने में लग गया। निःस्वार्थी, प्रभुपरायण सम्राट ने राजा जनक की नाईं जीते-जी आत्मसाक्षात्कार कर लिया।

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष।
मोह कभी न ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश॥

'मैं शरीर हूँ और संसार की चीजों से सुख मिलेगा, और चाहिए-और चाहिए...' - इस प्रकार की मोहजनित मान्यताओं से पार होकर -

पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान।
स्वस्वरूप में जागकर, राजा हुए आत्माराम॥

क्या तुम भी किसी बूढ़े बैल या बूढ़े व्यक्ति को देखकर अपने बुढ़ापे की कल्पना नहीं कर सकते! मगध नरेश की तरह तुम भी जगना चाहो तो जग सकते हो। अपने आत्मस्वरूप में लगना चाहो तो लग सकते हो। जगना चाहो और लगना चाहो तो अपने आत्मस्वरूप से प्रीति करो। करो हिम्मत! ॐ ॐ ॐ... हे जगत तेरी अनित्यता! हाय मनुष्य, तेरी वासना और अंधी दौड़!! आखिर कब तक!!!

ॐ ॐ श्री परमात्मने नमः। ॐ ॐ विवेकदाताय नमः। ॐ ॐ वैराग्यदाताय नमः। ॐ ॐ स्वस्वरूपदाताय नमः। श्रीहरि... श्रीहरि...

मगध नरेश की नाईं लग पड़ो। पहुँच जाओ अपने परम स्वभाव में।

संकर सहज सरूपु सम्हारा।
लागि समाधि अखंड अपारा॥

(श्री रामचरित. बा.कां. : ५७.४)

ऐसे ही आप भी अपने स्वरूप को सँभालो। जहाँ न राग, न द्वेष, न भय, न शोक, न अहं, न अज्ञान है, उस स्वस्वरूप को जानने में लग जाओ। वह दूर नहीं, देर नहीं, दुर्लभ नहीं!... ❒

लगाया झूठा आरोप, हुआ कुदरत का प्रकोप

निर्दोष हृदय की आह ईश्वरीय कोप ले आती है। जुल्मी का जुल्म तेज होता है न, तो तुरंत दंड मिलता है। जुल्मी के पहले के कर्म कुछ पुण्यदायी हैं तो उसको देर से दंड मिलता है, लेकिन जुल्म करने का फल तो मिलता, मिलता और मिलता ही है! न चाहे तो भी मिलता है। यह कर्म का संविधान है। ईश्वर का संविधान बहुत पक्का है। जुल्म सहनेवाले के तो कर्म कटे लेकिन जुल्म करनेवालों के तो पुण्य नष्ट हुए और बाकी उनके कर्मों का फल जब सामने आयेगा, एकदम रगड़े जायेंगे।

एक उच्चकोटि के गृहस्थी संत थे। उनका नाम था जयदेवजी। 'गीत-गोविंद' की रचना उन्होंने ही की है। एक बार वे यात्रा को निकले। एक राजा ने उनका बड़ा सम्मान किया और उन्हें स्वर्णमुद्राएँ, चाँदी के सिक्के आदि भेंट में दिया। इच्छा न होने पर भी राजा की प्रसन्नता के लिए जयदेवजी ने निःस्पृह भाव से कुछ भेंट स्वीकार की और अपने गाँव को चल पड़े। जब वे घने जंगल में पहुँचे तब कुछ डकैतों ने उन पर पीछे से आक्रमण किया और उनका सब सामान छीनकर हाथ-पैर काटके उन्हें कुएँ में धकेल दिया। कुएँ में अधिक पानी तो था नहीं, घुटने भर पानी! दलदल में क्या डूबते, वहाँ ऐसे गिरे जैसे गद्दी पर पड़ जायें।

जयदेवजी बोलते हैं : "गोविंद! यह भी तेरी

कोई लीला है। तेरी लीला अपरम्पार है !'' इस प्रकार कहते हुए वे भगवन्नाम गुनगुना रहे थे। इतने में गौड़ देश के राजा लक्ष्मणसेन वहाँ से गुजरे। कुएँ में से आदमी की आवाज आती सुनकर राजा ने देखने की आज्ञा दी। सेवक ने देखा तो कुएँ में जयदेवजी भजन गुनगुना रहे हैं। राजा की आज्ञा से उन्हें तुरंत बाहर निकाला गया।

राजा ने पूछा : ''महाराज ! आपकी ऐसी स्थिति किस दुष्ट ने की ? आपके हाथ-पैर किसने काटे ? आज्ञा कीजिये, मैं उसे मृत्युदंड दूँगा।''

उन ज्ञानवान महापुरुष ने कहा : ''कुछ नहीं, जिसके हाथ-पैर थे उसीने काटे।

करन करावनहार स्वामी ।
सकल घटा के अंतर्यामी ॥

यहाँ (हृदय में) भी जो बैठा है, उसीके हाथ-पैर हैं और जिसने काटे वह और यह सब एक है।''

''नहीं-नहीं, फिर भी बताओ।''

बोले : ''राजन् ! तुम मेरे में श्रद्धा करते हो न, तो जिसके प्रति श्रद्धा होती है उसकी बात मानी जाती है, आज्ञा मानी जाती है। इस बात को आप दुबारा नहीं पूछेंगे।''

राजा के मुँह पर ताला लग गया। राजा उन्हें अपने महल में ले गये। वैद्य-हकीम आये, जो कुछ उपचार करना था किया।

बात पुरानी हो गयी। राजा को सूझा कि यज्ञ किया जाय, जिसमें दूर-दूर के संत-भक्त आयें, जिससे प्रजा को संतों के दर्शन हों, प्रजा का मन पवित्र हो, भाव पवित्र हों, विचार पवित्र हों। कर्म और फल उज्ज्वल हों, भविष्य उज्ज्वल हो।

यज्ञ का आयोजन हुआ। जयदेवजी को मुख्य सिंहासन पर बिठाया गया। अतिथि आये। भंडारा हुआ, सबने भोजन किया। उन्हीं चार डकैतों ने सोचा, 'साधुओं के भंडारे में साधुवेश धारण करके जाने से दक्षिणा मिलेगी।' इसलिए वे साधु का वेश बनाकर वहाँ आ पहुँचे।

अंदर आकर देखा तो स्तब्ध रह गये, 'अरे ! जिसका धन छीनकर हाथ-पैर काटके हमने कुएँ में फेंका था, वही आज राजा से भी ऊँचे आसन पर बैठा है ! अब तो हमारी खैर नहीं। क्या करें ? वापस भी नहीं जा सकते और आगे जाना खतरे से खाली नहीं है...'

इतने में जयदेवजी की नजर उन साधुवेशधारी डाकुओं पर पड़ी। उनकी ओर इशारा करते हुए वे बोले : ''राजन् ! ये चार हमारे पुराने मित्र हैं। इनकी मुझ पर बड़ी कृपा रही है। मैं इनका एहसान नहीं भूल सकता हूँ। आप मुझे जो कुछ दक्षिणा देनेवाले हैं, वह इन चारों मित्रों को दे दीजिये।''

डकैत काँप रहे हैं कि हमारा परिचय दे रहे हैं, अब हमारे आखिरी श्वास हैं लेकिन जयदेवजी के मन में तो उनके लिए सद्भावना थी।

राजा ने उन चारों को बड़े सत्कार से चाँदी के बर्तन, स्वर्णमुद्राएँ, मिठाइयाँ, वस्त्रादि प्रदान किये। जयदेवजी ने कहा : ''मंत्री ! इन महापुरुषों को जंगल पार करवाकर इनके गन्तव्य तक पहुँचा दो।''

जाते-जाते मंत्री को आश्चर्य हुआ कि ये चार महापुरुष कितने बड़े हैं ! मंत्री ने बड़े आदर से पूछा : ''महापुरुषो ! गुस्ताखी माफ हो, आपके लिए जयदेवजी महाराज इतना सम्मान रखते हैं और राजा ने भी आपको सम्मानित किया, आखिर आपका जयदेवजी के साथ क्या संबंध है ?''

उन चार डकैतों ने एक-दूसरे की तरफ देखा, थोड़ी दूर गये और कहानी बनाकर बोले : ''ऐसा है कि जयदेव हमारे पुराने साथी हैं। हम लोग एक राज्य में कर्मचारी थे। इन्होंने ऐसे-ऐसे खजाने चुराये कि राजा ने गुस्से में आकर इनको मृत्युदंड देने की आज्ञा दे दी, लेकिन हम लोगों ने दया करके इन्हें बचा लिया और हाथ-पैर कटवाकर छोड़ दिया।

हम कहीं यह भेद खोल न दें, इस डर से इन्होंने हमारा मुँह बंद करने के लिए स्वागत कराया है।''

देखो, बदमाश लोग कैसी कहानियाँ बनाते हैं ! कहानी पूरी हुई-न हुई कि सृष्टिकर्ता से सहन नहीं हुआ और धरती फट गयी, वे चारों उसमें धँसने लगे और बिलखते हुए घुट-घुटके मर गये । मंत्री दंग रह गया कि ऐसे भी मृत्यु होती है ! उनको दी हुई दक्षिणा, सामान आदि वापस लाकर राजा के पास रखते हुए मंत्री ने पूरी घटना सुना दी ।

राजा ने जयदेवजी को चकित मन से सब बातें बतायीं । महाराज दोनों कटे हाथ ऊपर की तरफ करके कहने लगे : ''हे ईश्वर ! बेचारों को अकाल मौत की शरण दे दी !'' उनकी आँखों से आँसू बहने लगे । ईश्वर को हुआ कि ऐसे जघन्य पापियों के लिए भी इनके हृदय में इतनी दया है ! तो ईश्वर का अपना दयालु स्वभाव छलका और जयदेवजी के कटे हुए हाथ-पैर फिर से पूर्ववत् हो गये । राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ ।

उसने बड़े ही कौतूहल से आग्रहपूर्वक पूछा : ''महाराज ! अब असलियत बताइये, वे कौन थे ?''

अब जयदेवजी को असलियत बतानी पड़ी । पूर्व वृत्तांत बताकर उन्होंने कहा : ''राजन् ! मैंने सोचा कि 'इनको पैसों की कमी है, इसीलिए बेचारे इतना जघन्य पाप करते हैं । न जाने किन योनियों में इस पाप का फल इनको भुगतना पड़ेगा ! इस बार आपसे खूब दक्षिणा, धन दिला दूँ ताकि वे ऐसा जघन्य पाप न करें ।' क्योंकि कोई भी पापी पाप करता है तो कोई देखे चाहे न देखे, उसे उसका पाप कुतर-कुतरके खाता है । फिर भी ये पाप से नहीं बचे तो सृष्टिकर्ता से सहा नहीं गया, ईश्वरीय प्रकोप से धरती फटी, वे घुट मरे ।''

जो व्यक्ति उदारात्मा है, प्राणिमात्र का हितैषी है उसके साथ कोई अन्याय करे, उसका अहित करे तो वह भले सहन कर ले किंतु सृष्टिकर्ता उस जुल्म करनेवाले को देर-सवेर उसके अपराध का दंड देते ही हैं ।

संत का निंदकु महा हतिआरा ।
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥
संत के दोखी की पुजै न आस ।
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥

आप निश्चिंत रहो, शांत रहो, आनंदित रहो तो आपका तो मंगल होगा, अगर आपका कोई अमंगल करेगा तो देर-सवेर कुदरत उसका स्वभाव बदल देगी, वह आपके अनुकूल हो जायेगा । अगर वह आपके अनुकूल नहीं होता तो फिर चौदह भुवनों में भी उसे शांति नहीं मिलेगी और जिसके पास शांति नहीं है, फिर उसके पास बचा ही क्या ! उसका तो सर्वनाश है । दिन का चैन नहीं, निश्चिंतता की नींद नहीं, हृदय में शांति नहीं तो फिर और जो कुछ भी है, उसकी कीमत भी क्या ! ❐

'ऋषि प्रसाद' वार्षिक सम्मेलन में पूज्यश्री का उद्बोधन

भगवान महाकालेश्वर की पावन नगरी उज्जैन में उत्तरायण शिविर के अवसर पर १७ जनवरी को 'ऋषि प्रसाद' सेवाधारियों का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें पूज्यश्री ने अपने आत्मीयतापूर्ण उद्बोधन में कहा : ''लोगों को भगवान और संत-वाणी से जोड़ना यह अपने-आपमें बड़ी भारी सेवा है । वाहवाही, चाटुकारी के लिए तो नेता भी सेवा कर लेता है, रोटी का टुकड़ा देखकर तो कुत्ता भी पूँछ हिला देता है परंतु मान-अपमान, ठंडी-गर्मी, आँधी-तूफान सहकर बिना स्वार्थ, प्रभु-प्रीत्यर्थ, प्राणिमात्र के मंगल की भावना से, अहं के नाते नहीं प्रभु के नाते, सत्ता-वाहवाही के नाते नहीं मानवता के नाते सेवा करना कितनी ऊँची बात है !''

महिमा किस विधि गाऊँ !

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद स्वामी
श्री लीलाशाहजी महाराज का अवतरण-दिवस : ११ मार्च

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज ने सत्-चित्-आनंद स्वरूप परमात्मा को पाया था एवं अनेक साधकों को इसी दिशा की ओर मोड़ा था। उनका जीवन पृथ्वी के समस्त जीवों के लिए दिव्य प्रेरणास्रोत है। उनकी प्रत्येक चेष्टा समष्टि के हित के लिए ही थी। उनके दर्शनमात्र से मन प्रसन्न हो जाता था, निराशा के बादल छँट जाते थे, हताश लोगों में उत्साह का संचार हो जाता था एवं उलझे लोगों की उलझनें दूर होकर उनमें नयी चेतना छा जाती थी। उनका सम्पूर्ण जीवन ही मानो कर्म, ज्ञान, भक्तियोग के समन्वय की त्रिवेणी था। वे योग-सामर्थ्य के धनी थे। आपश्री के जीवनकाल में जाने-अनजाने घटित ऐसी कई यौगिक शक्ति से सम्पन्न घटनाएँ देखने-सुनने को मिलती हैं, जैसे ट्रेन को रोक देना, नीम के पेड़ को चला देना, नेत्रहीन व्यक्ति को नेत्र मिलना, निःसंतानों को संतान की प्राप्ति होना आदि।

एक बार संत लीलारामजी (पूर्व का नाम) किसी गाँव में से जा रहे थे, तब एक गरीब स्त्री अपने मृतक पुत्र को रास्ते में रखकर दूर बैठके रो रही थी। बालक को अचानक रास्ते में सोये हुए देखकर संत लीलारामजी के श्रीमुख से एकाएक निकल पड़ा : ''बेटा ! उठ, उठ।''

संत लीलारामजी के वचन सुनकर वह मृतक बालक तुरंत उठ खड़ा हुआ और संत के चरणों में जा गिरा। यह दैवी चमत्कार देखकर वह स्त्री दौड़ती-दौड़ती आयी और संतश्री के चरण पकड़कर खूब-खूब आभार प्रकट करने लगी। संतश्री उस स्त्री से बोले : ''माँ ! मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि यह बात तू किसीसे न कहना।'' परंतु सत्य कहाँ तक छुप सकता था !

तप करे पाताल में, प्रगट होय आकाश।
रज्जब तीनों लोक में, छिपे न हरि का लाल॥

थोड़े ही समय में गाँव के लोगों को इन महापुरुष के सामर्थ्य का पता चल गया। यह जानते ही ये महापुरुष तुरंत उस गाँव को छोड़कर चले गये।

संत लीलारामजी अक्सर अपने रचे हुए एक गीत की निम्नलिखित पंक्तियाँ गुनगुनाते और अपने श्रोताओं को सुनाते :

चार दिन की जिंदगानी में, तन से,
मन से हमेशा के लिए रहता नहीं इस दारे फानी[1] में।
कुछ अच्छा काम कर लो, चार दिन की जिंदगानी में॥
तन से सेवा करो जगत की, मन से प्रभु के हो जाओ।
शुद्ध बुद्धि से तत्त्वनिष्ठ हो, मुक्त अवस्था को तुम पाओ॥

इस प्रकार उनका पूरा जीवन परोपकारमय था। उनकी नस-नस में परहित, परमात्म-प्रेम की भावना के सिवाय कुछ न था। उनका जीवन-संदेश था : ''जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक भलाई के कार्य करते रहो। अपने-आपको जानो, कर्तृत्व के बोझ से परे अपने परमानंद को पाओ।''

अलग-अलग क्षेत्रों में उन्होंने अनेकों लोक-कल्याण के कार्य किये किंतु कर्तापने का भाव न रखा। वे नम्रता एवं निष्कामता की साक्षात् प्रतिमा थे। वे हमेशा कहते : ''अलग-अलग जगहों पर उसी एक महान (ईश्वरीय) शक्ति द्वारा ये कार्य होते हैं, 'लीला' तो कुछ भी नहीं करता।'' ❐

१. नश्वर लोक

अधर्मियों का सत्यानाश हो !

मनोज त्रिवेदी

इन दिनों प्रातः अनेक टी.वी. चैनलों व समाचार-पत्रों में देखने व पढ़ने को मिल रहा है कि संत श्री आसारामजी बापू पुलिस के पुलिसिया जाल में फँसे हुए हैं। उनके ऊपर गुजरात प्रदेश की पुलिस द्वारा राजू चांडक उर्फ राजू लम्बू के कहने पर गोली मारने व जानलेवा हमले आई.पी.सी. धारा ३०७ आदि कई धाराओं का मुकदमा पंजीकृत कर लिया गया है। यह बात आठवें आश्चर्य जैसी लग रही है कि एक विश्वप्रसिद्ध संत, जो पूरी दुनिया में सनातन धर्म व हिन्दू संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के साथ-साथ नशामुक्त जीवन को प्रोत्साहन देना, योग-पद्धति से निरोग रहना सिखाना व अनेक आध्यात्मिक मंत्रों के माध्यम से निराश व्यक्तियों में जान डालना, देश के कोने-कोने में हमारी आगे आनेवाली युवाशक्ति को बाल संस्कारों के माध्यम से अच्छे संस्कार देने का कार्य करना तथा हिन्दुओं के प्रमुख त्यौहारों में गरीब व आदिवासी बस्तियों में स्वयं जाकर जीवनोपयोगी सामग्री बँटवाना आदि समाज-उपयोगी अनेक कार्य करके क्या कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को गोली मार सकता है ? कदापि नहीं, कभी नहीं।

पुलिस व प्रशासन के पास शक्ति होती है कि वे तो एक छोटे-से साधारण कपड़े को काला सर्प बना देते हैं। अपनी लाठियों के बल पर किसी निर्दोष व्यक्ति से जबरन अपराध साबित करवा लेते हैं। अपराधी को सजा अवश्य मिलनी चाहिए, सबके साथ न्याय होना चाहिए परंतु यह इस देश का दुर्भाग्य है कि वास्तविक अपराधी आज भी कानून के दायरे से बहुत दूर रहते हैं। बापूजी के अहमदाबाद आश्रम में की गयी तोड़फोड़ की सी.डी. देखकर हम हैरान हो गये और इतिहास के पन्नों में पढ़े हुए अनेक करुण प्रसंग, जिनमें अंग्रेजों द्वारा गुलाम भारत के लोगों को यातनाएँ देकर जंजीरों में जकड़के मारा-पीटा जाता था, की याद आ गयी और हृदय द्रवित हो गया। न सिर्फ सैकड़ों साधकों को बाल पकड़कर बंदूक के कुंदों व डण्डों से उनके गुप्तांगों में मारते हुए गाड़ियों में बैठाया गया, बल्कि बेरहमीपूर्वक आश्रम की सम्पत्ति पुलिस द्वारा नष्ट की गयी, रोकड़ चुरायी गयी, लूटमार की गयी, घण्टों उत्पात मचाया गया। साधकों को इतना मारा-पीटा कि उनके हाथ, पैर व अंग भंग कर दिये गये। पुलिस का यह अधर्म संविधान की किस धारा के अंतर्गत आता है ? किस कानून व विवेचना में यह लिखा है कि इस तरह से निर्दोष, निरपराध लोगों को मारा-पीटा जाय ?

देश के किसी भी प्रदेश की पुलिस के पास क्या इतनी हिम्मत है कि इस तरह खुले रूप से किसी मस्जिद, मदरसे व गिरजाघर में घुसकर (बापूजी के आश्रम की तरह) तोड़फोड़ करे और किसी मौलवी-पादरी को मारे-पीटे ? ऐसा कभी नहीं कर सकते। क्योंकि करेंगे तो उस क्षेत्र में आगजनी हो जायेगी, दंगा हो जायेगा, तबाही मच जायेगी। ये केवल हिन्दू संतों व आश्रमों में ही अपना कानून चलाते हैं। अनेक राजनेता सिमी (आतंकवादी संगठन) के पक्ष में बयानबाजी करते हैं, कोई नेता खुले रूप से भारत माँ को डायन कहता है, कोई अफजल गुरु जैसे क्रूर आतंकवादी को फाँसी न देने की वकालत करता है। पुलिस ऐसे राजनेताओं को स्पष्ट द्रोह के जुर्म में क्यों गिरफ्तार नहीं करती ? क्यों डरती है आतंकवादियों को सरेआम गोली मारने से ? क्यों जेलों में आतंकवादियों को बिरियानी खिलायी जाती है ? १३ सितम्बर २००८ को दिल्ली में बम धमाके हुए। २६ नवम्बर २००८ को देश की औद्योगिक

राजधानी मुंबई में बम धमाके हुए। क्या स्वामी आदित्यनाथ पर हमला आतंकवाद नहीं है ? क्या स्वामी लक्ष्मणानंदजी की हत्या आतंकवाद नहीं है ? इस्लामी आतंकवाद के अनेक भयानक चेहरे देशवासियों को भयभीत कर रहे हैं। जिला मुजफ्फरनगर में हिन्दुओं की धार्मिक शोभायात्रा को अपवित्र किया गया, सुल्तानपुर में गणेश चतुर्थी की धार्मिक यात्रा पर आक्रमण हुआ परंतु इन कट्टरपंथी तत्त्वों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं हुई। हिंसक और आतंकी संगठनों को तुष्ट करने के लिए हिन्दू समाज का दमन हो रहा है। हमारे हिन्दू संतों, आचार्यों व हमारे धर्म के ऊपर कोई भी आँख उठाये, जो कोई भी अत्याचार करे, हमें उससे मजबूती से लड़ना होगा। संत श्री आसारामजी बापू के आश्रम पर हमला - यह एक साजिश है। साजिश करनेवालों का भी हमको डटकर मुकाबला करना होगा। आनेवाले समय में यदि हिन्दू भाइयों के अंदर अपनी संस्कृति व धर्म के खिलाफ अत्याचार करनेवालों को सबक सिखाने की भावना व संघर्ष करने की क्षमता न रही तो हो सकता है कि हमको फिर से गुलामी के दिन देखने पड़ें।

'अखिल भारत हिन्दू महासभा' ऐसे षड्यंत्रों के प्रति सदैव सजग रहती है। महासभा के कार्यकर्ताओं के अंदर पूज्य वीर सावरकरजी जैसी देशभक्ति की भावना सदैव विद्यमान रहती है। महासभा पूज्य बापूजी के साथ हो रहे इस तरह के अन्याय का विरोध अपनी जान की बाजी लगाकर करेगी। उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जनपद में धरना-प्रदर्शन के माध्यम से पुलिस की इस गंदी कार्यप्रणाली व अत्याचार को रोकने हेतु प्रदर्शन, ज्ञापन व आध्यात्मिक शक्ति के आधार पर कार्य करने की रणनीति प्रांतीय अध्यक्ष श्री महंत नारायण गिरि (पीठाधीश्वर-दुधेश्वर नाथ मठ, गाजियाबाद) की अध्यक्षता में आगामी प्रदेश कार्य समिति की बैठक में सम्पन्न होगी। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणिजी महाराज ने भी इस अमानवीय घटना की निंदा की। उ.प्र. के कार्यकारी अध्यक्ष श्री राकेश कुमार आर्य एडवोकेट ने भी पुलिस के इस अन्यायपूर्ण रवैये की कटु आलोचना की है। अत्याचार का विरोध भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्री परशुरामजी, पवनपुत्र श्री हनुमानजी, महर्षि दधीचि, महर्षि गौतम आदि ने सदैव ही किया है तथा अत्याचारियों को सबक सिखाया है। हम भी अपने-आपको उनके अनुयायी मानते हैं तो क्यों अत्याचार, जुल्म बर्दाश्त करें ! मृत्यु तो निश्चित है तो क्यों डरें ! इस देश के अनेक क्रांतिवीरों ने हँसते हुए अपनी जानें गँवायी हैं, उन क्रांतिकारियों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के सपनों को हमें भी साकार रखने के लिए प्रत्येक क्षण सजग रहना होगा। सधन्यवाद !

- मनोज त्रिवेदी

सम्पादक, सा. हिन्दू वार्ता

महामंत्री, अखिल भारत हिन्दू महासभा, उ.प्र. ❒

संत-वचनामृत

जो दगा करै गुरुदेव से नर,
च्यार जन्म दुख पावै ॥ टेक ॥
पहले जनम बनेगा कुत्ता,
रस्ता बीच पड्या रहै सूता।
भौंक भौंक मर जाइसी नर,
सोट पड्यां चिल्लावै ॥
दूजे जनम बनेगा ढांढा[१],
तेली के घर रहसी बांध्या।
तेरा पेट भरै नहीं घास से,
नर अंखियाँ पट्टी बंधावै ॥
तीजे जनम बनेगा बन्दर,
रस्सी बांध ले जाय कलन्दर।
तैंने डुग डुग चाल चलायसी,
नर घर-घर भीख मंगावै ॥
चौथे जनम बनेगा ऊँटा,
घालि नकेल बँध्यो रहै खूँटा।
कहै कबीरा पूरब पश्चिम लद्या फिरै,
अणतोल्या बोझ धरयां अरड़ावै ॥

('श्री दादू अमृतवाणी' पुस्तक, पृ. ४६ से)

१. बैल

भगवन्नाम-माहात्म्य

''राम-नाम के प्रताप से पत्थर तैरने लगे, राम-नाम के बल से वानर-सेना ने रावण के छक्के छुड़ा दिये, राम-नाम के सहारे हनुमान ने पर्वत उठा लिया और राक्षसों के घर अनेक वर्ष रहने पर भी सीताजी अपने सतीत्व को बचा सकीं । भरत ने चौदह साल तक प्राण धारण करके रखे क्योंकि उनके कण्ठ से राम-नाम के सिवा दूसरा कोई शब्द न निकलता था। इसलिए संत तुलसीदासजी ने कहा कि 'कलिकाल का मल धो डालने के लिए राम-नाम जपो ।'

इस तरह प्राकृत और संस्कृत दोनों प्रकार के मनुष्य राम-नाम लेकर पवित्र होते हैं परंतु पावन होने के लिए राम-नाम हृदय से लेना चाहिए। मैं अपना अनुभव सुनाता हूँ। मैं संसार में यदि व्यभिचारी होने से बचा हूँ तो राम-नाम की बदौलत। मैंने दावे तो बड़े-बड़े किये हैं परंतु यदि मेरे पास राम-नाम न होता तो तीन स्त्रियों को मैं बहन कहने के लायक न रहा होता। जब-जब मुझ पर विकट प्रसंग आये हैं, मैंने राम-नाम लिया है और मैं बच गया हूँ। अनेक संकटों से राम-नाम ने मेरी रक्षा की है। अपने इक्कीस दिन के उपवास में राम-नाम ने ही मुझे शांति प्रदान की है और मुझे जिलाया है।''

– महात्मा गांधी

रामनाम की अपनी महिमा है, शिवनाम की भी अपनी महिमा है। सभी वैदिक मंत्र अपने-आपमें पूर्ण हैं। वेदपाठ करने से पुण्यलाभ होता है लेकिन पाठ करने से पहले और अंत में भूल-चूक निवारण तथा साफल्य के लिए 'हरि ॐ' का उच्चारण किया जाता है।

भयनाशन दुर्मति हरण
कलि में हरि को नाम।
निशदिन नानक जो जपे
सफल होवहिं सब काम ॥

जिनको जो गुरुमंत्र मिला है वह उनके लिए सर्वश्रेष्ठ है । भीख माँगनेवाले अनाथ, सूरदास बालक प्रीतम को गुरु भाईदासजी से दीक्षा मिली । ध्यान-भजन में लग गया तो संत प्रीतमदासजी बन गये और ५२ आश्रम उनकी पावन प्रेरणा से बने । कबीरजी को रामानंद स्वामी से राम-नाम की दीक्षा मिली, ध्रुव को नारदजी से 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की दीक्षा मिली । धनभागी हैं वे जिनको गुरुमंत्र की दीक्षा मिली और उसीमें लगे रहे दृढ़ता से । भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : **भजन्ते मां दृढव्रताः ।**

जो दृढ़निश्चयी हैं वे इसी जन्म में पूर्णता तक पहुँचते हैं। नरसिंह मेहता ने कहा :

भोंय सुवाडुं भूखे मारुं,
उपरथी मारुं मार।
एटलुं करतां हरि भजे
तो करी नाखुं निहाल ॥

अर्थात्
धरा सुलाऊँ भूखा मारूँ, ऊपर से मारूँ मार।
इतना करते हरि भजे, तो कर डालूँ निहाल ॥

कसौटी की घड़ियाँ आने पर भी जो भगवान का रास्ता नहीं छोड़ते, वे निहाल हो जाते हैं। □

शरीर के साथ दिल को भी रँग लो

(होली : २८ फरवरी)

- पूज्य बापूजी

'होली' भारतीय संस्कृति की पहचान करानेवाला एक पुनीत पर्व है । यह पारस्परिक भेदभाव मिटाकर प्रेम व सद्भाव प्रकट करने का एक सुंदर अवसर है, अपने दुर्गुणों तथा कुसंस्कारों की आहुति देने का एक यज्ञ है तथा अंतर में छुपे हुए प्रभुत्व को, आनंद को, निरहंकारिता, सरलता और सहजता के सुख को उभारने का उत्सव है ।

होली का यह उत्सव हम प्राचीनकाल से मनाते आ रहे हैं । भगवान शिवजी ने इस दिन कामदहन किया था और होलिका, जिसको वरदान था न जलने का, प्रह्लाद को लेकर अग्नि की ज्वालाओं के बीच बैठी थी । वह होलिका जल गयी तथा भक्तिसम्पन्न प्रह्लाद अमरता के गीत गुँजाने में सफल हुए अर्थात् निर्दोष भक्ति के बल से वे धधकती अग्नि में भी सुरक्षित रहे । तो यह उत्सव खबर देता है कि तामसी व्यक्ति के पास कितना भी बल हो, कितना भी सामर्थ्य हो सज्जनों को डरना नहीं चाहिए । भले सज्जन नन्हे-मुन्हे दिखते हों, प्रह्लाद की नाईं छोटे दिखते हों फिर भी वे बड़े-में-बड़े ईश्वर का आश्रय लेकर कदम आगे बढ़ायें ।

विघ्न-बाधा हमें दबोच सके,
यह उसमें दम नहीं ।
हमें दबा सके यह जमाने में दम नहीं ।
हमसे जमाना है जमाने से हम नहीं ॥

ये पंक्तियाँ प्रह्लाद, मीरा, शबरी, तुकारामजी आदि-आदि सत्संगनिष्ठों के जीवन में साकार पायी गयीं ।

हो... ली... जो बीत गयी उस कमजोरी को याद न कर । आनेवाले भविष्य का भय मत कर ! **चरैवेति... चरैवेति...** आगे बढ़ो... आगे बढ़ो...

यह होली का उत्सव तुम्हारे छुपे हुए आत्मिक रस को जगानेवाला है । लोग कुत्ते और बिल्लियों से रस लेने के लिए उन्हें पालते हैं और न जाने टी-गौंडी आदि कितने जीवाणुओं की हानियाँ अपने जीवन में ले आते हैं । बिल्ली के पेट में पाये जानेवाले टी-गौंडी जीवाणु कमजोर मानसिकतावाले को, गर्भवती महिला को और शिशु को नुकसान पहुँचाते हैं । मानव रस खोजने के लिए बिल्ली की शरण जाता है, कुत्ते की शरण जाता है, पान-मसाला, शराब-कबाब की शरण जाता है, क्लबों की शरण जाता है, और भी न जाने किस-किसकी शरण जाता है । होलिकोत्सव बोलता है : नहीं !

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।

तुम सर्वभाव से अपने आत्मसुख की शरण आओ, आत्मप्रकाश की शरण आओ । घबराओ मत लाला-लालियाँ ! होली - हो... ली... ।

मुस्कराके गम का जहर जिनको पीना आ गया ।
यह हकीकत है कि जहाँ में उनको जीना आ गया ॥

हर इन्सान चाहता है जीवन रसमय हो, जीवन प्रेममय हो, जीवन निरोगता से छलके तो आपसी राग-द्वेष भूलकर -

तुझमें राम मुझमें राम सबमें राम समाया है ।
कर लो सभीसे स्नेह जगत में कोई नहीं पराया है ॥

भारतीय संस्कृति के ये पावन त्यौहार एवं

उनको मनाने के तरीके केवल मन की प्रसन्नता ही नहीं बढ़ाते, तन की तंदुरुस्ती एवं बुद्धि में बुद्धिदाता की खबर भी देते हैं।

गर्मी के दिनों में सूर्य की किरणें हमारी त्वचा पर सीधी पड़ती हैं, जिससे शरीर में गर्मी बढ़ती है। हो सकता है कि शरीर में गर्मी बढ़ने से गुस्सा बढ़ जाय, स्वभाव में खिन्नता आ जाय। इसीलिए होली के दिन प्राकृतिक पुष्पों का रंग एकत्र करके एक-दूसरे पर डाला जाता है, ताकि हमारे शरीर की गर्मी सहन करने की क्षमता बढ़ जाय और सूर्य की तीक्ष्ण किरणों का उस पर विकृत असर न पड़े।

हम पर्वों को तो मनाते हैं परंतु पर्वों के जो सिद्धांत हैं उनसे हम मीलों दूर रह जाते हैं। हमारे ऋषियों ने जिस उद्देश्य से त्यौहारों की नीति बनायी, उसका यथार्थ लाभ न लेकर हम उन्हें अपनी वासना के अनुसार मना लेते हैं।

ऋतु-परिवर्तनकाल के इस त्यौहार पर प्रकृति की मादकता छायी रहती है। वैदिक काल में शरीर को झकझोरनेवाली सूर्य की तीक्ष्ण किरणों से टक्कर लेने के लिए पलाश के फूलों का रस लिया जाता था। यह रोगप्रतिकारक शक्ति, सप्तधातु और सप्तरंगों को संतुलित रखने की व्यवस्था थी। पलाश के फूल हमारे तन, मन, मति और पाचन-तंत्र को पुष्ट करते हैं। पलाश वृक्ष के पत्तों पर भोजन करनेवाले को भी स्वास्थ्य-लाभ के साथ पुण्य-लाभ व सत्त्वगुण बढ़ाने में मदद मिलती है।

ऋतु-परिवर्तन के इन १०-२० दिनों में नीम के १५-२० कोमल पत्तों के साथ २ काली मिर्च चबाकर खाने से भी वर्ष भर आरोग्य दृढ़ होता है। बिना नमक का भोजन १५ दिन लेनेवाले की आयु और प्रसन्नता में बढ़ोतरी होती है। होली के बाद खजूर खाना मना है।

होली की रात्रि चार पुण्यप्रद महारात्रियों में आती है। होली की रात्रि का जागरण और जप बहुत ही फलदायी होता है। इसलिए इस रात्रि में जागरण और जप कर सभी पुण्यलाभ लें। यह उत्सव रंग के साथ आंतर-चेतना, आंतर-आराम और अंतरात्मा की प्रीति देनेवाला है।

हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को आग में न जलने का वरदान मिला था। चिता में बैठी हुई उस होलिका की गोद में प्रह्लाद को बिठा दिया गया और चिता को आग लगा दी गयी। परंतु यह क्या ! जिसे न जलने का वरदान प्राप्त था वह होलिका जल गयी और प्रह्लाद जीवित रह गये ! बिल्कुल उलटा हो गया क्योंकि प्रह्लाद सत्य की शरण थे, ईश्वर की शरण थे।

संत कहते हैं कि यह जीव प्रह्लाद है। हिरण्यकशिपु यानी अंधी महत्त्वाकांक्षा, वासना जो संसार में रत रहने के लिए उकसाती रहती है। होलिका यानी अज्ञान, अविद्या जो जीव को अपनी गोद में बिठाकर रखती है तथा उसे संसार की त्रिविध तापरूपी अग्नि में जलाना चाहती है। यदि यह जीवरूपी प्रह्लाद ईश्वर और सद्गुरु की शरण में जाता है तो उनकी कृपा से प्रकृति का नियम बदल जाता है। त्रिविध तापरूपी अग्नि ज्ञानाग्नि के रूप में परिवर्तित हो जाती है। उस ज्ञान की आग से अज्ञानरूपी होलिका भस्म हो जाती है तथा जीवरूपी प्रह्लाद मुक्त हो जाता है। यही होली का तत्त्व है।

होली रंगों का त्यौहार है। रंग जरूर खेलो, मगर गुरुज्ञान का रंग खेलो। रासायनिक रंगों से तो हर साल होली खेलते हो, इस बार गुरुज्ञान के रंग से अपने हृदय को रँग लो तो तुम भी कह उठोगे :

भोला ! भली होली हुई,
भ्रम भेद कूड़ा बह गया।
नहिं तू रहा नहिं मैं रहा,
था आप सो ही रह गया॥

(शेष पृष्ठ १६ पर)
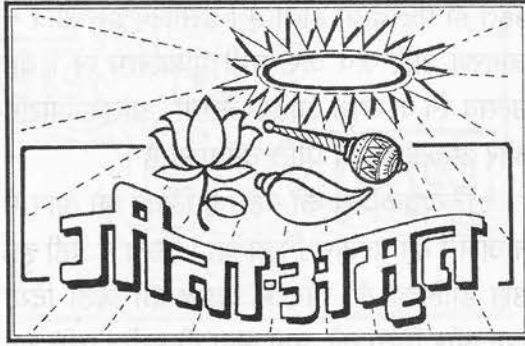
विशुद्धात्मा बनें

– पूज्य बापूजी

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥

'जिसका मन अपने वश में है, जो जितेन्द्रिय और विशुद्ध अंतःकरणवाला है तथा सम्पूर्ण प्राणियों का आत्मरूप परमात्मा ही जिसका आत्मा है, ऐसा कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी लिप्त नहीं होता है ।' **(श्रीमद् भगवद्गीता : ५.७)**

विशुद्ध मन, विशुद्ध अंतःकरणवाले को विशुद्धात्मा बोलते हैं । मनुष्य विशुद्धात्मा कई तरीकों से हो सकता है । सेवा करके, श्रवण-मनन-निदिध्यासन करके अथवा तो आत्मारामी महापुरुषों की आज्ञानुसार अपनी वासना-मनमुखता मिटाके, जप-ध्यान, सुमिरन करके जिसका अंतःकरण विशुद्ध हो गया है, उसको 'योगयुक्त' कहा जाता है ।

जैसे हनुमानजी सेवा करते-करते, जनक राजा निष्काम कर्म करते-करते, राजा परीक्षित सत्संग सुनते-सुनते विशुद्धत्व को प्राप्त हो गये । जो विशुद्धात्मा हो जाते हैं, वे फिर कर्म करते समय भी लिप्त नहीं होते हैं ।

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।

जिनका अंतःकरण शुद्ध हो जाता है फिर उनकी इन्द्रियाँ उनका साधन बन जाती हैं, उनकी आज्ञाकारी हो जाती हैं ।

अंतःकरण शुद्ध हुआ तो मन वश में हो जाता है और मन वश में हुआ तो इन्द्रियाँ पाले हुए पशु की नाईं हो जाती हैं अथवा यूँ कहो कि ड्राइवर कुशल है तो गाड़ी के गियर, क्लच, ब्रेक, स्टियरिंग, एक्सलरेटर सब उसकी आज्ञा में चलेंगे । ऐसे ही जिसका मन अपने वश में है, उसकी इन्द्रियाँ उसके कहने में चलती हैं और जिसका मन वश में नहीं है, उसको इन्द्रियाँ वैसे ही घसीट लेती हैं जैसे अनजान, सिक्खड़ ड्राइवर को गाड़ी घसीट लेती है । इसलिए विशुद्ध अंतःकरणवाले व्यक्ति को इन्द्रियों को संयत करने में परिश्रम नहीं पड़ता, यह तो उसके लिए खेल बन जाता है । इन्द्रियों को रोकने का मतलब यह है कि चित्त में राग-द्वेष न हो । व्यवहार करते हुए भी, इन्द्रियों का उपयोग करते हुए भी, परिणामों में सुख और दुःख दिखते हुए भी चित्त में सुख-दुःख नहीं होता तो वह जितेन्द्रिय हो गया ।

जितेन्द्रिय तो केवल योगी भी मिल जायेगा, जितेन्द्रिय कर्मयोगी भी मिल जायेगा लेकिन यहाँ एक शर्त है – **सर्वभूतात्मभूतात्मा** । जैसे सब घड़ों में आकाश और सब घड़े आकाश में, ऐसे सब प्राणियों में अपने को और अपने में सब प्राणियों को जो देख लेता है ऐसा जो **'सर्वभूतात्मभूतात्मा'** है, वह कर्म करता हुआ भी लिप्त नहीं होता है । नहीं तो योग से इन्द्रियाँ तो जीत लीं, मन तो शुद्ध हुआ फिर भी समाधि करेगा तो समाधि का सुख एक प्रकार का होगा और प्रवृत्ति करेगा तो प्रवृत्ति का रंग दूसरे प्रकार का होगा । इस तरह वह अंतःकरण की स्थिति से जुड़ा हुआ रहेगा । लेकिन जो **'सर्वभूतात्मभूतात्मा'** अर्थात् सब भूतप्राणियों का आत्मा हो जाता है अर्थात् सब भूतप्राणियों को अपने में और अपने को सबमें देखता है, वह अंतःकरण से अपना संबंध-विच्छेद कर देता है । एक ही घड़ा अपने को नहीं मानता है, अपने को

आकाश मानता है। अब एक घड़े ने दूसरे घड़े को पानी दे दिया तो आकाश को क्या ! ऐसे ही जो **'सर्वभूतात्मभूतात्मा'** हो गया, उस बुद्धपुरुष को ऊँचे-से-ऊँचे कर्म हर्ष नहीं दे सकते और छोटे-से-छोटे कर्म शोक नहीं दे सकते। बड़े-से-बड़ा लाभ और बड़ी-से-बड़ी हानि भी उस महापुरुष के चित्त को प्रभावित नहीं कर सकती। कर्म करते हुए भी वे महापुरुष लेपायमान नहीं होते। जैसे जल पर लिखे हुए अक्षर कोई असर नहीं कर सकते, ऐसे ही उन महापुरुषों के द्वारा की हुई प्रवृत्ति उनके चित्त पर कोई असर नहीं करती। जल या आकाश पर तुमने गालियाँ, धन्यवाद, आशीर्वाद, श्लोक आदि कुछ भी अच्छा-बुरा लिख दिया, फिर उसे पढ़ने का प्रयास करो तो नहीं दिखेगा। जल पर अक्षर लिखना दिखता तो है लेकिन जल पर उसका असर नहीं होगा। ऐसे ही जिसका अंतःकरण निर्लिप्त हो गया, शुद्ध हो गया, उसकी प्रवृत्तियाँ उसके अतःकरण में ऐसे होती हैं जैसे जल या आकाश पर लिखे हुए अक्षर।

यह **'सर्वभूतात्मभूतात्मा'** वास्तव में तो ऐसा है लेकिन हम लोगों की नजर नाम-रूप पर इतनी पक्की हो गयी है कि हमें वह नहीं दिखता। आकाश की तरफ जो लोग ज्यादा निहारते हैं न, उनकी दृष्टि थोड़ी व्यापक होती है लेकिन जो जमीन पर ही देखते हैं, उनका नाम-रूप पक्का हो जाता है। जो भूताकाश पर निहारते-निहारते चिदाकाश में पहुँच जाते हैं, ऐसे लोग **'सर्वभूतात्मभूतात्मा'** हो जाते हैं।

जिसने अंतःकरण को शुद्ध करके, योगाभ्यास करके मन को एकाग्र किया और तत्त्वज्ञान पाकर **'सर्वभूतात्मभूतात्मा'** हो गया है, उसका तो सम्पूर्ण कर्मयोग सिद्ध हो गया है। लेकिन जिसने अभी-अभी कर्मयोग प्रारम्भ किया हो, अभी अंतःकरण शुद्ध करने के रास्ते चल पड़ा हो उसके लिए यह शर्त है कि अपने सुख की इच्छा न करे और दूसरों का दुःख उससे देखा न जाय। इससे क्या होगा ? दूसरों को सुखी देखकर सुखी हो जाय तो अपने को सुखी करने में जो मेहनत होनेवाली थी, वासनाएँ दृढ़ होनेवाली थीं, जो समय खर्च होनेवाला था, वह बच जायेगा और दूसरों को सुखी देखकर अपने हृदय में खुशी लायेगा तो उस सुखी होनेवाले से भी ज्यादा सुख महसूस होगा। निष्कामता से दूसरों के दुःख मिटानेवाले की सूझबूझ भी बढ़ती है और औदार्य सुख भी बढ़ता है। दूसरों को दुःखी न देख सकेगा तो दूसरों के दुःख को निवृत्त करेगा। दूसरों के दुःख को निवृत्त करने में लगेगा तो अपने सुख का चिंतन उसको नहीं होगा, इससे उसके चित्त में जो शांति या आनंद आयेगा, वह स्वयं सुख भोगने से भी नहीं आता।

अपना दुःख मिटाने में जितना आनंद आता है, उससे ज्यादा दूसरे का दुःख मिटाने में आनंद आता है। आप भोजन करते हैं तो आपको संतुष्टि होती है लेकिन आप अगर थोड़े सात्त्विक हैं, शुद्ध अंतःकरणवाले हैं तो स्वयं भोजन करने से ज्यादा संतुष्टि आपको किसी जरूरतमंद को भोजन कराने में मिलेगी। अशुद्ध अंतःकरणवाला, स्वार्थी आदमी होगा तो दूसरों को खिलाने का अवसर आने पर खिन्न हो जायेगा।

विपरीत-से-विपरीत परिस्थितियाँ आयें फिर भी अंतःकरण में खिन्नता न आये, यह अंतःकरण-शुद्धि कर्मयोगी का लक्षण है।

अपने को कोई कह दे कि 'जल्दी आना, यह नहीं करना...' तो खिन्न हो जाते हैं। यह अंतःकरण की अशुद्धि का लक्षण है। जितना-जितना अंतःकरण अशुद्ध होता है उतनी-उतनी खिन्नता ज्यादा होती है। 'अपने हितैषी हैं, गुरु हैं, माँ-बाप हैं, पड़ोसी हैं, हितचिंतक हैं...'- ऐसा जानते हुए भी वे कुछ कह देते हैं तो हम लोगों के अंतःकरण में खिन्नता आ जाती है। शुद्ध अंतःकरणवाला तो धन्यवाद देगा लेकिन जो अशुद्ध

अंतःकरणवाला है वह भौंहें चढ़ायेगा। तो आदमी जैसा होता है ऐसा सामने से ग्रहण करता है। अगर शुद्ध हृदयवाला है तो गुरु के ब्रह्म-उपदेश को ऐसे सुनेगा कि सुननेमात्र से उसका अपना बन जायेगा।

महाभारत का युद्ध शुरू होनेवाला था। संजय दिव्य दृष्टि से रणभूमि में जो देखता था, धृतराष्ट्र के आगे वर्णन करता था। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को 'गीता' का जो अमृतमय उपदेश दे रहे थे, उसे वर्णन करते-करते संजय रोमांचित हो गया, उसका कंठ भर आया। अष्टसात्त्विक भावों में मानो संजय लीन हो गया, ब्रह्मवेत्ताओं की ब्रह्मचर्चा करते-करते ब्रह्मस्वरूप हो गया। क्षण भर के लिए शांत रहा उस अद्वैत आनंद में, निःसंकल्प परमानंद में, फिर जब मन स्फुरा तब बोला : ''राजन्! ...इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा।''

तब धृतराष्ट्र ने कहा : ''तू दूसरी बातें क्या करता है ! यह बता कि मेरे बेटों की जय होगी कि नहीं ?''

इतनी सारी जो संजय की ऊँचाई थी, उन्होंने ग्रहण नहीं की क्योंकि ममता से अंतःकरण मलिन था। ऐसे ही गुरुदेव कई बार कहते हैं : 'तुम ब्रह्म हो, तुम चैतन्य हो, तुम साक्षी हो, तुम द्रष्टा हो, तुम सोऽहं-सोऽहं जपा करो।' लेकिन हम लोगों का अंतःकरण मलिन होता है तो कमनसीबी ऐसी होती है कि वह बात तो हमारे हृदय में चिपकती नहीं और गुरुदेव ने कभी थोड़ी-सी कुछ कसौटी कर दी तो वह बुरी लग जाती है, चुभ जाती है। मलिन अंतःकरण में मलिन बात ऐसी चुभ जाती है कि हम लोग भौंहें चढ़ा लेते हैं। चाहिए तो यह कि अपनी गलती कोई बता रहा है अथवा तो गुरुदेव कृपा करके गलती निकालना चाह रहे हैं, निकाल रहे हैं तो उनके मार्गदर्शन-अनुसार चलते हुए अशुद्ध अंतःकरण को शुद्ध करके विशुद्धात्मा, **'सर्वभूतात्मभूतात्मा'** बनकर जीवन्मुक्त हो जायें। □

संकल्प

संकल्प तो भुक्त इच्छाओं का प्रभाव है अर्थात् पहले जो भोग चुके हैं, उसीके प्रभाव से उठता है। यदि एक संकल्प पूरा हो गया और उसका सुख भोगा तो उसीके प्रभाव से दूसरा संकल्प उठेगा। संकल्प-पूर्ति का सुख ही नवीन संकल्प को जन्म देता है। यदि हम संकल्प-पूर्ति का सुख पसंद करते रहेंगे तो एक के बाद एक नवीन संकल्प उत्पन्न होता ही रहेगा और अभाव-ही-अभाव पल्ले पड़ेगा। संकल्प-पूर्ति का सुख मत भोगो तथा संकल्प-निवृत्ति की शांति में रमण मत करो। बस, तब जीवन्मुक्ति की प्राप्ति हो जायेगी। फिर संकल्प-अपूर्ति का दुःख भी नहीं होगा क्योंकि यदि संकल्प-पूर्ति का सुख भोगोगे तो ही संकल्प-अपूर्ति का दुःख होगा।

संकल्प तो किसी वस्तु का संकेत है, वह स्वतः वस्तु नहीं है। अतः आपके किसी पुराने इतिहास का परिचय है संकल्प या नवीन कार्यक्रम की सूचना है संकल्प अथवा किये हुए की स्मृति है संकल्प। संकल्प का उठना बंद हो जाय, यह आपके वश की बात नहीं है। संकल्प उठने बंद नहीं हो सकते पर उनसे संबंध तोड़ना चाहिए।

संकल्प अच्छे भी उठते हैं और बुरे भी। ज्ञान और सामर्थ्य के अनुसार जो संकल्प उठे उसे पूरा करके खत्म कर दो। संकल्प वह पूरा करना है जिसमें दूसरों का हित हो। उसीको कर्तव्य कहते हैं। जो संकल्प कभी पूरा न हो, बार-बार उठे, वह ज्ञान-विरोधी है, सामर्थ्य-विरोधी है। अतः उसका त्याग कर दो। इस प्रकार आप निर्विकल्प हो जायेंगे।

जो नहीं कर सकते हो उसे करने की सोचो मत और जो नहीं करना चाहिए उसे करो मत। जो कर सकते हो उसे जमा मत रखो, कर डालो। उसके अंत में आपको योग की प्राप्ति हो जायेगी। □

माता-पिता परम आदरणीय

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

एक पिता अपने छोटे-से पुत्र को गोद में लिये बैठा था। कहीं से उड़कर एक कौआ उनके सामने छज्जे पर बैठ गया। पुत्र ने पिता से पूछा : ''पापा ! यह क्या है ?''

पिता : ''कौआ है।''

पुत्र ने फिर पूछा : ''यह क्या है ?''

पिता ने कहा : ''कौआ है।''

पुत्र बार-बार पूछता : ''पापा ! यह क्या है ?''

पिता स्नेह से बार-बार कहता : ''बेटा ! कौआ है कौआ।''

कई वर्षों के बाद पिता बूढ़ा हो गया। एक दिन पिता चटाई पर बैठा था। घर में कोई उसके पुत्र से मिलने आया। पिता ने पूछा : ''कौन आया है ?''

पुत्र ने नाम बता दिया। थोड़ी देर में कोई और आया तो पिता ने फिर पूछा। इस बार झल्लाकर पुत्र ने कहा : ''आप चुपचाप पड़े क्यों नहीं रहते ! आपको कुछ करना-धरना तो है नहीं, 'कौन आया-कौन गया' दिन भर यह टाँय-टाँय क्यों लगाये रहते हैं ?''

पिता ने लम्बी साँस खींची, हाथ से सिर पकड़ा। बड़े दुःखभरे स्वर में धीरे-धीरे कहने लगा : ''मेरे एक बार पूछने पर तुम कितना क्रोध करते हो और तुम दसों बार एक ही बात पूछते थे कि यह क्या है ? मैंने कभी तुम्हें झिड़का नहीं। मैं बार-बार तुम्हें बताता : बेटा ! कौआ है।''

बच्चो ! भूलकर भी कभी अपने माता-पिता का ऐसे तिरस्कार नहीं करना चाहिए। वे तुम्हारे लिए परम आदरणीय हैं। उनका मान-सम्मान करना तुम्हारा कर्तव्य है। माता-पिता ने तुम्हारे पालन-पोषण में कितने कष्ट सहे हैं। कितनी रातें माँ ने तुम्हारे लिए गीले में सोकर गुजारी हैं, और भी तुम्हारे जन्म से लेकर अब तक कितने कष्ट तुम्हारे लिए सहन किये हैं, तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। कितने-कितने कष्ट सहकर तुमको बड़ा किया और अब तुमको वृद्ध माता-पिता को प्यार से दो शब्द कहने में कठिनाई लगती है ! पिता को 'पिता' कहने में भी शर्म आती है !

अभी कुछ वर्ष पहले की बात है :

इलाहाबाद में रहकर एक किसान का बेटा वकालत की पढ़ाई कर रहा था। बेटे को शुद्ध घी, चीज-वस्तु मिले, बेटा स्वस्थ रहे इसलिए पिता घी, गुड़, दाल-चावल आदि सीधा-सामान घर से दे जाते थे।

एक बार बेटा अपने दोस्तों के साथ कुर्सी पर बैठकर चाय-ब्रेड का नाश्ता कर रहा था। इतने में वह किसान पहुँचा। धोती फटी हुई, चमड़े के जूते, हाथ में डंडा, कमर झुकी हुई... आकर उसने गठरी उतारी। बेटे को हुआ, 'बूढ़ा आ गया है, कहीं मेरी इज्जत न चली जाय !' इतने में उसके मित्रों ने पूछा : ''यह बूढ़ा कौन है ?''

लड़का : ''He is my servant.'' (यह तो मेरा नौकर है।)

लड़के ने धीरे-से कहा किंतु पिता ने सुन लिया। वृद्ध किसान ने कहा : ''भाई ! मैं नौकर

तो जरूर हूँ लेकिन इसका नौकर नहीं हूँ, इसकी माँ का नौकर हूँ। इसीलिए यह सामान उठाकर लाया हूँ।''

यह अंग्रेजी पढ़ाई का फल है कि अपने पिता को मित्रों के सामने 'पिता' कहने में शर्म आ रही है, संकोच हो रहा है ! ऐसी अंग्रेजी पढ़ाई और आडम्बर की ऐसी-की-तैसी कर दो, जो तुम्हें तुम्हारी संस्कृति से दूर ले जाय !

भारत को आजाद हुए ६२ साल हो गये फिर भी अंग्रेजों की गुलामी दिल-दिमाग से दूर न हुई !

पिता तो आखिर पिता ही होता है चाहे किसी भी हालत में हो। प्रह्लाद को कष्ट देनेवाले दैत्य हिरण्यकशिपु को भी प्रह्लाद कहता है : 'पिताश्री !' और तुम्हारे लिए तनतोड़ मेहनत करके तुम्हारा पालन-पोषण करनेवाले पिता को नौकर बताने में तुम्हें शर्म नहीं आती !

भारतीय संस्कृति में तो माता-पिता को देव कहा गया है : **मातृदेवो भव, पितृदेवो भव...** उसी दिव्य संस्कृति में जन्म लेकर माता-पिता का आदर करना तो दूर रहा, उनका तिरस्कार करना, वह भी विदेशी भोगवादी सभ्यता के चंगुल में फँसकर ! यह कहाँ तक उचित है ?

भगवान गणेश माता-पिता की परिक्रमा करके ही प्रथम पूज्य हो गये। आज भी प्रत्येक धार्मिक विधि-विधान में श्रीगणेशजी का प्रथम पूजन होता है। श्रवण कुमार ने माता-पिता की सेवा में अपने कष्टों की जरा भी परवाह न की और अंत में सेवा करते हुए प्राण त्याग दिये। देवव्रत भीष्म ने पिता की खुशी के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत पाला और विश्वप्रसिद्ध हो गये। महापुरुषों की पावन भूमि भारत में तुम्हारा भी जन्म हुआ है। स्वयं के सुखों का बलिदान देकर संतान हेतु अगणित कष्ट उठानेवाले माता-पिता पूजने योग्य हैं। उनकी सेवा करके अपने भाग्य को बनाओ। किन्हीं संत ने ठीक ही कहा है :

जिन मात-पिता की सेवा की,
तिन तीरथ जाप कियो न कियो।

'जो माता-पिता की सेवा करते हैं, उनके लिए किसी तीर्थयात्रा की आवश्यकता नहीं है।'

माता-पिता व गुरुजनों की सेवा करनेवाला और उनका आदर करनेवाला स्वयं चिरआदरणीय बन जाता है। मैंने माता-पिता-गुरु की सेवा की, मुझे कितना सारा लाभ हुआ है वाणी में वर्णन नहीं कर सकता। नारायण... नारायण...

जो बच्चे अपने माता-पिता का आदर-सम्मान नहीं करते, वे जीवन में अपने लक्ष्य को कभी प्राप्त नहीं कर सकते। इसके विपरीत जो बच्चे अपने माता-पिता का आदर करते हैं, वे ही जीवन में महान बनते हैं और अपने माता-पिता व देश का नाम रोशन करते हैं। लेकिन जो माता-पिता अथवा मित्र ईश्वर के रास्ते जाने से रोकते हैं, उनकी वह बात मानना कोई जरूरी नहीं।

जाके प्रिय न राम-बैदेही ।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम,
जद्यपि परम सनेही ॥

(विनय पत्रिका) □

(पृष्ठ ११ से 'शरीर के साथ दिल को भी रँग लो' का शेष)

होली यानी जो हो... ली... कल तक जो होना था, वह हो लिया। आओ, आज एक नयी जिंदगी की शुरुआत करें। जो दीन-हीन है, शोषित है, उपेक्षित है, पीड़ित है, अशिक्षित है, समाज के उस अंतिम व्यक्ति को भी सहारा दें। जिंदगी का क्या भरोसा ! कुछ काम ऐसे कर चलो कि हजारों दिल दुआएँ देते रहें... चल पड़ो उस पथ पर, जिस पर चलकर कुछ दीवाने प्रह्लाद बन गये। करोगे न हिम्मत ! तो उठो और चल पड़ो प्रभुप्राप्ति, प्रभुसुख, प्रभुज्ञान, प्रभुआनंद प्राप्ति के पुनीत पथ पर... □

आपका भाव कैसा है ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

आप भगवान का स्मरण करोगे तो भगवान आपका स्मरण करेंगे क्योंकि वे चैतन्यस्वरूप हैं। आप पैसों का, बँगले का स्मरण करोगे तो जड़ पैसों को, जड़ बँगले को तो पता नहीं है कि आप उनका स्मरण कर रहे हो। आप गाड़ी का स्मरण करोगे तो वह अपने-आप नहीं मिलेगी लेकिन भगवान का स्मरण करोगे तो वे स्वयं आकर मिलेंगे। शबरी ने भगवान का स्मरण किया तो वे पूछते-पूछते शबरी के द्वार पर आ गये। **भावग्राही जनार्दनः...** मीरा ने स्मरण किया तो जहर अमृत हो गया। वह हृदयेश्वर आपके भाव के अनुसार किसी भी रूप में कहीं भी मिलने में सक्षम है, अगर सोऽहंस्वरूप में मिलना चाहो तो सोऽहंस्वरूप में भी अपना अनुभव कराने में समर्थ है। केवल अपनी बुद्धि में उसके प्रति भाव होना चाहिए। देवी-देवता का, मूर्ति का आदर-पूजन, माता-पिता अथवा गुरु का आदर-पूजन यह हमारी बुद्धि में भगवद्भाव को, भगवद्ज्ञान को, भगवद्रस को प्रकट करने का मार्ग है।

भाव की बड़ी भारी महिमा है। मान लो, एक सुपारी है। एक का उसे खाने का भाव है, दूसरे का उससे कमाने का भाव है, तीसरे का उसे पूजने का भाव है। तो फायदा ज्यादा किसने लिया ? खानेवाले ने, कमानेवाले ने कि पूजनेवाले ने ? सुपारी तो जड़ है, प्रकृति की चीज है, उसमें भगवद्बुद्धि करने से भगवद्भाव पैदा होता है और खाने की भावना करते हैं तो तुच्छ लाभ होता है। बेचकर कमाने की भावना करते हैं तो ज्यादा लाभ होता है लेकिन उसमें गणेशजी का भाव करके पूजा करते हैं तो और ज्यादा लाभ होता है। सुपारी तो वही-की-वही है परंतु खाना है तो भोग, कमाना है तो लोभ और पूज्यभाव, भगवद्भाव है तो भगवद्रस देके भगवान के समीप कर देगी। अब सुपारी को खाके मजा लो, बेचके मजा लो या उसका पूजन करके मजा लो तुम्हारी मर्जी। खाके मजा लिया तो भोगी, बेचके मजा लिया तो लोभी और सुपारी में गणपति-बुद्धि की तो आप उपासक हो गये, भक्त हो गये और सुपारी का तत्त्व जानके अपना तत्त्व और सुपारी का तत्त्व **'एकमेव अद्वितीयं'** कर दिया तो हो गये ब्रह्म !

ऐसे ही अगर आप गुरु से संसारी फायदा लेते हैं तो यह भोगबुद्धि हुई लेकिन गुरु चिन्मय हैं, दिव्य हैं, ब्रह्मस्वरूप हैं, ज्ञानस्वरूप हैं, तारणहार हैं, व्यापक हैं, सबके अंतरात्मा, भूतात्मस्वरूप हैं, प्राणिमात्र के हितैषी हैं, सुहृद हैं - ऐसा अहोभाव करते हैं और उनके वचनों में विश्वास करते हैं, उनके अनुसार चलते हैं तो कितना फायदा होता है !

आप सुपारी में गणपति का भाव करो तो सुपारी उसी समय आपके लिए ऐसा भाव नहीं कर सकती कि 'यह मुक्तात्मा हो जाय, चिंतारहित हो जाय...।' ऐसा सोचकर सुपारी उपदेश नहीं देगी। आपके अपने भाव के अनुसार अंतःकरण की वृत्ति बनेगी लेकिन गुरु के प्रति भगवद्भाव, ब्रह्मभाव, अहोभाव करोगे तो गुरुदेव के अंतःकरण से भी आपके उद्धार के लिए शुभ संकल्प की, विशेष कृपा की वर्षा होने लगेगी, उनके द्वारा ऊँचा सत्संग मिलेगा, आनंद-आनंद हो जायेगा। सुपारी वही-की-वही लेकिन नजरिया बदलने से लाभ बदल जाता है। गुरु वही-के-वही लेकिन नजरिया

बदलने से लाभ बदल जाता है ।

कर्मों में भी अलग-अलग भाव अलग-अलग फल देते हैं । जहाँ राग से, द्वेष से सोचा जाता है, वहाँ कर्म बंधनकारक हो जाता है । जहाँ करने का राग मिटाने के लिए सबकी भलाई के, हित के भाव से सोचा और किया जाता है, वहाँ कर्म बंधन से छुड़ानेवाला हो जाता है । जैसे कोई दुष्ट है, धर्म का, संस्कृति का, मानवता का हनन कर-करके अपना कर्मबंधन बढ़ानेवाले दुष्कर्म में लिप्त है और न्यायाधीश उसकी भलाई के भाव से उसे फाँसी देता है तो न्यायाधीश को पुण्य होता है । 'हे प्रभुजी ! अब इस शरीर में यह सुधरेगा नहीं, इसलिए मैं इसे फाँसी दे दूँ यह आपकी सेवा है' - इस भाव से अगर न्यायाधीश फाँसी देता है तो उसका अंतःकरण ऊँचा हो जायेगा लेकिन 'यह फलाने पक्ष का है, अपने पक्ष का नहीं है... इसलिए फाँसी दे दो' - ऐसा भाव है तो फिर न्यायाधीश का फाँसी देना अथवा सजा देना बंधन हो जायेगा ।

आपके कर्मों में हित की भावना है, समता है तो आपके कर्म आपको बंधनों से मुक्त करते जायेंगे । अगर स्वार्थ, अधिकार और सत्ता पाने की या द्वेष की भावना है तो आपके कर्म आपको बाँधते जायेंगे । अपने शुद्ध कर्म से किसीको लाभ मिलता है तो अपनी संसार की आसक्ति मिटती है, दूसरे की भलाई का, हृदय की उदारता का आनंद आता है लेकिन दूसरे का हक छीना तो संसार की आसक्ति और कर्मबंधन बढ़ता है ।

आप जैसा देते हैं, वैसा ही आपको वापस मिल जाता है । आप जो भी दो, जिसे भी दो भगवद्भाव से, प्रेम से और श्रद्धा से दो । हर कार्य को ईश्वर का कार्य समझकर प्रेम से करो, सबमें परमेश्वर के दर्शन करो तो आपका हर कार्य भगवान का भजन हो जायेगा । □

नास्तिकता और आस्तिकता

परमात्मा में जगत को देखना नास्तिकता है क्योंकि वास्तव में जगत है नहीं । जगत में परमात्मा को देखना आस्तिकता है क्योंकि वास्तव में परमात्मा ही हैं । नास्तिक संसारी होता है और आस्तिक साधक होता है । कल्याण आस्तिक का होता है नास्तिक का नहीं क्योंकि नास्तिक की दिशा विपरीत है ।

परमात्मा में जगत को देखने से जगत ही दिखता है परमात्मा नहीं दिखते और जगत में परमात्मा को देखने से परमात्मा ही दिखते हैं जगत नहीं दिखता । जगत में परमात्मा को देखने का साधन है - जगत की वस्तुओं को केवल सेवा-सामग्री मानना और व्यक्तियों को परमात्मा का स्वरूप मानकर उस सेवा-सामग्री से उनकी सेवा करना, उनको सुख पहुँचाना ।

यदि व्यक्तियों को परमात्मा का स्वरूप मानकर वस्तुओं से उनकी सेवा की जाय तो संसार लुप्त हो जायेगा और परमात्मा प्रकट हो जायेंगे अर्थात् 'सब कुछ परमात्मा ही है'- इसका अनुभव हो जायेगा । जैसे रस्सी में साँप का भ्रम मिटने पर साँप लुप्त हो जाता है पर रस्सी तो रहती है, ऐसे ही परमात्मा में जगत का भ्रम मिटने पर जगत लुप्त हो जाता है पर परमात्मा तो रहते ही हैं । संसार की तो मान्यता है पर 'परमात्मा हैं' यह वास्तविकता है ।

मुक्ति का सरल साधन

यह संसार प्रतिदिन हमसे छूटता जाता है, इसकी किसीको कल्पना भी नहीं होती । एक-एक क्षण सामने आता है तथा वह अतीत में परिणत हो जाता है और इसी तरह इस जीवन का अंत होकर कर्म और वासनानुसार पुनर्जन्म होता है ।

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरपि जननी जठरे शयनम्।
(चर्पट-पंजरिका)

इस संसार के कालचक्र में जीव को बार-बार आना-जाना पड़ता है । अतएव लोग महात्माओं से प्रश्न करते हैं कि इस जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पाने का क्या उपाय है ? महात्मा लोग उत्तर देते हैं कि 'जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पाने का सरल साधन है : भगवान को अपना मानके भगवत्प्राप्ति हेतु प्रीतिपूर्वक भगवन्नाम का सुमिरन और जप अत्यंत सुगम, शीघ्र परम लाभ कराने में सक्षम है । इसके अतिरिक्त इस असार संसार-सागर से पार होने का दूसरा कोई सरल साधन नहीं है । योग, तप आदि अनेक मार्ग परमात्मा की प्राप्ति के लिए बताये गये हैं किंतु ये सबके लिए सरल और सुलभ नहीं हैं । इस कलिकाल में सबके लिए सरल, सुलभ और अमोघ साधन तो यह भगवन्नाम-स्मरण और जप ही है।'

भगवान के अनंत नाम, अनंत गुण और अनंत महिमा है, जिसका पूरा वर्णन करना किसीके लिए भी सम्भव नहीं । आवश्यकता है केवल दृढ़ विश्वास की । जो अपने चित्त की सारी वृत्तियों को भगवान के चरणारविंदों में लगाकर भगवन्नाम का जप करते हैं, वे ही सफलता प्राप्त करते हैं ।

प्रायः लोग पूछा करते हैं कि जप कैसे करना चाहिए ? शास्त्र में जप के तीन प्रकार बतलाये गये हैं : (१) वाचिक (२) उपांशु (३) मानसिक ।

वाचिक जप वह है जिसमें वाणी के द्वारा भगवान के नाम का उच्चारण किया जाता है और उसे दूसरे लोग भी सुन सकते हैं । उपांशु जप वह है जिसमें नामोच्चारण में होंठ हिलते हैं परंतु शब्द सुनायी नहीं पड़ते । मानसिक जप वह है जिसमें न तो होंठ हिलते हैं, न कोई शब्द होता है । यह भीतर-ही-भीतर होता रहता है ।

जप के इन सभी प्रकारों का अपना-अपना महत्त्व है । प्रथम, दीर्घ वाचिक जप करते हुए (भगवन्नाम का दीर्घ उच्चारण करते हुए) मन को एकाग्र किया जाता है । फिर उपांशु जप करते हुए कुछ अंतर्मुख हुआ जाता है । अंत में हृदय से मंत्रजप हो और आप उसके साक्षी होकर उसका अनुभव करें, यह मानसिक जप की स्थिति है । बीच में जब भी मन इधर-उधर भटकने लगे पुनः ॐकार, हरि ॐ या भगवन्नाम का वाचिक दीर्घ जप करना चाहिए ।

व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति के अनुसार देखें तो जो नया साधक है, उसे बहिर्मुख वृत्ति के कारण वाचिक जप (कीर्तन आदि) में अधिक रुचि होगी । कुछ दिन अभ्यास करने पर अंतर्मुखता बढ़ने से उपांशु जप में उसकी रुचि होने लगेगी । परंतु जो सद्गुरु से दीक्षित साधक है उसकी वृत्ति गुरुकृपा एवं चैतन्यमय गुरुमंत्र के प्रभाव से अति शीघ्र अंतर्मुख हो जाती है और उसकी सीधे मानसिक जप में गति हो जाती है । आखिर में वह उस ऊँचाई को पाता है :

सुमिरन ऐसा कीजिये खरे निशाने चोट।
मन ईश्वर में लीन हो हले न जिह्वा होंठ ॥

ईश्वरानुभव के बाद फिर उस महामना का बोलना-चलना सब भगवन्मय हो जाता है । जो भक्त इच्छारहित होकर, सच्चे हृदय से केवल भगवान को, सद्गुरु को ही अपने हृदय में बसाकर मात्र उनकी प्रसन्नता के उद्देश्य से जप करता है, उसके हृदय में परमात्मा प्रकट होने लगते हैं । उसे जप के सम्पूर्ण फल-अमिट सुख, अखण्ड शांति, अनंत आनंद का अनुभव होने लगता है।

'श्री रामचरितमानस' में आता है :

सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई।
तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई ॥
(अयो.कां. : १३०.३)

मन ते सकल बासना भागी।
केवल राम चरन लय लागी ॥
(उ.कां. : १०९.३)

जिन साधकों का चित्त भगवान के चरणों में लगा है और जिनके चित्त में कोई विषय-वासना या अहंकार नहीं है, उन्हीं साधकों के हृदय में भगवान का निरंतर निवास है और उन्हीं भक्तों के वश में भगवान रहते हैं ।

मम गुन गावत पुलक सरीरा।
गदगद गिरा नयन बह नीरा ॥
काम आदि मद दंभ न जाकें।
तात निरंतर बस मैं ताकें ॥
(श्री रामचरित. अर.कां. : १५.६)

स्वयं भगवान ने देवर्षि नारदजी से कहा है :

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न वै।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

'हे नारद ! मैं कभी वैकुण्ठ में भी नहीं रहता, योगियों के हृदय का भी उल्लंघन कर जाता हूँ परंतु जहाँ मेरे प्रेमी भक्त मेरे गुणों का गान करते हैं, वहाँ मैं अवश्य रहता हूँ ।' □

तीन दुर्लभ चीजें

भगवान शंकराचार्यजी कहते हैं : **किं दुर्लभं ?** 'जगत में दुर्लभ क्या है ?'

सद्गुरु, सत्संगति और ब्रह्मविचार ।

सद्गुरु मिल जायें और मनुष्य की अपनी योग्यता न हो तो सद्गुरु से ब्रह्मविचार, ब्रह्मचर्चा, ब्रह्मध्यान, परमात्म-साक्षात्कार नहीं कर पायेगा । सद्गुरु मिल गये लेकिन अपनी योग्यता नहीं है, तत्परता नहीं है तो मनुष्य उनसे भी ईंट, चूना, लोहा, लक्कड़ आदि संसार की तुच्छ चीजें चाहता है । जिसकी अपनी कुछ आध्यात्मिक कमाई है, अपने कुछ पुण्य हैं वह सद्गुरु से सत् तत्त्व की जिज्ञासा करेगा । 'संसार का बंधन कैसे छूटे ? आँख सदा के लिए बंद हो जाय, इन नेत्रों की ज्योति कम हो जाय उसके पहले आत्म-ज्योति की जगमगाहट कैसे हो ? कुटुम्बीजन मुँह मोड़ लें उसके पहले अपने सर्वेश्वरस्वरूप की मुलाकात कैसे हो ?'- ऐसे प्रश्न करनेवाला, आत्मविचार और आत्म-प्यास से भरा हुआ जो साधक है, वही सद्गुरु का पूरा लाभ उठाता है। बाकी तो जैसे कोई सम्राट प्रसन्न हो जाय और उससे चना-चिउड़ा और चार पैसे की च्युइंगम-चॉकलेट माँगे, वैसे ही ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु प्राप्त हो जायें और उनसे संसार की चीजें प्राप्त करके अपने को भाग्यवान मान ले, वह नन्हे-मुन्ने बच्चे जैसा है जो तुच्छ खिलौनों में खुश हो जाता है।

पाताललोक, मृत्युलोक और स्वर्गलोक - इन तीनों लोकों में सद्गुरु, सत्संगति और ब्रह्मविचार की प्राप्ति दुर्लभ है। ये तीन चीजें जिसे मिल गयीं, चाहे उसे और कुछ नहीं मिला, फिर भी वह सबसे ज्यादा भाग्यवान है। बाहर की सब चीजें हों, केवल ये तीन चीजें नहीं हों तो भले चार दिन के लिए उसे भाग्यवान मान लो, सामाजिक दृष्टि से उसे बड़ा मान लो लेकिन वास्तव में उसने जीवन का फल नहीं पाया। □

एक क्षण भी कुसंग न करें

- श्री उड़िया बाबाजी महाराज

अच्छे व्यक्तियों का संग करके मानव अनेक सद्गुणों से युक्त होता है, जबकि दुर्व्यसनी एवं दुष्टों का संग करके वह कुमार्गी बन जाता है। सत्पुरुषों या संतों अथवा परमात्मा के संग को सत्संग कहते हैं। संत-महात्मा तथा विद्वान हमेशा लोक-परलोक का कल्याण करनेवाली बातें बताकर लोगों को संस्कारित करते हैं, जबकि व्यसनी अपने पास आनेवाले को अपनी तरह के व्यसन में लगाकर उसका लोक-परलोक बिगाड़ देता है। इसीलिए धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि भूलकर भी व्यसनी, निंदक, नास्तिक तथा कुमार्गी का एक क्षण का भी संग नहीं करना चाहिए।

आदर्श माता-पिता वे हैं, जो अपनी संतान को सदाचार, सत्याचरण और धर्माचरण के संस्कार देते हैं। जब से हमने संतान को सदाचार, सत्याचरण और धर्माचरण के संस्कार देना बंद किया है, तभी से पतन शुरू हुआ है। अतः संस्कारों पर विशेष बल दिया जाना जरूरी है।

हमारी माताएँ तथा संत बालकों एवं युवकों को पग-पग पर सत्प्रेरणा देते रहते थे। संध्या के समय भोजन नहीं करना चाहिए, भोजन के समय बोलना नहीं चाहिए, भोजन से पहले हाथ-पैर धोने चाहिए, पवित्र स्थान में पूर्वाभिमुख होकर भोजन करना चाहिए, तामस भोजन सर्वदा वर्जनीय है - जैसी प्रतिदिन की बातें हमें संस्काररूप में ज्ञात हो जाती थीं किंतु अंग्रेजी भाषा के कुप्रभाव ने तथा भौतिक सुखों की बढ़ती चाह ने हमारी युवा पीढ़ी को संस्कारहीन बना दिया है। इसीलिए बालकों को, युवकों को देववाणी संस्कृत की शिक्षा दिलानी चाहिए। उन्हें विदेशी भाषा, विदेशी वेशभूषा तथा विदेशी खानपान के मोह से दूर रखने के प्रयास किये जाने चाहिए।

सत्संग से ही संस्कारों की प्राप्ति होती है। सत्संग करने से भगवत्प्राप्ति का मार्ग दिखलायी पड़ता है। जिस मार्ग से सत्पुरुष गये हैं, उसी मार्ग पर चले बिना हमें भगवत्प्राप्ति का मार्ग नहीं मिल सकता। दुर्व्यसनी के कुछ पल के संग से हमारे संचित संस्कार तक लुप्त हो जाते हैं और वह हमें सहज ही में दुर्व्यसनों की ओर आकर्षित करने में सफल हो जाता है। **अतः दुर्व्यसनी, नास्तिक तथा हर समय सांसारिक प्रपंचों में फँसे रहनेवाले व्यक्ति का संग भूलकर भी नहीं करना चाहिए।** ❑

सुख-दुःख का कारण : अहंकार

जब तक शरीर है तब तक तो उसके रहने के लिए कोई-न-कोई आश्रय चाहिए ही। फिर वह चाहे महल हो या गुरु का मठ अथवा आश्रम या जंगल में घास की झोंपड़ी ही हो। यदि अहंकार नहीं है तो आश्रय के रूप में तीनों ही समान हैं और यदि अहंकार है तो प्रत्येक में अभिमान उपस्थित हुए बिना न रहेगा। सुख-दुःख का कारण यह ग्रहण-त्याग की इच्छा करनेवाला अहंकार ही है। वस्तु में कोई तारतम्य नहीं, फिर एक परिस्थिति का द्वेषपूर्वक त्याग करना और दूसरी का रागपूर्वक आश्रय करना - यह अहंकार की ही वृत्ति है, इसलिए अहंकार का त्याग करना चाहिए। अहंकार के त्याग से सर्वस्व का त्याग हो जाता है और बिना माँगे मुक्ति मिल जाती है।

एकाग्रता और अनासक्ति

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥

'जो योगी निरंतर संतुष्ट है, मन-इन्द्रियोंसहित शरीर को वश में किये हुए है और मुझमें दृढ़ निश्चयवाला है - वह मुझमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझको प्रिय है ।'

(भगवद्गीता : १२.१४)

जो यत्नशील है, दृढ़निश्चयी है और जिसने आत्मलक्ष्य बनाया है वह सतत संतुष्ट रहेगा। भोगी सतत संतुष्ट नहीं रह सकता है। ऐसा कोई भोग नहीं जिसके पीछे पराधीनता, शक्तिक्षीणता और जड़ता न हो। तो संसारी जीवन से भागना भी नहीं है, संसारी जीवन में डूबना भी नहीं है; संसारी जीवन का सदुपयोग करके अपना लक्ष्य प्राप्त कर लो बस।

नंगे पैर यात्रा करते-करते निराश भी नहीं होना लेकिन गाड़ी मिली तो उससे चिपकके बैठना भी नहीं। जब जो गाड़ी मिले, ऑटो मिले, साइकिल मिले, जो मिले हमें मंजिल तक पहुँचना है। ऐसे ही जो साधन मिले, हमें तो सत्-चित्-आनंदस्वरूप आत्मदेव में पहुँचना है।

सब बदलता है फिर भी जो नहीं बदलता, सब साथ छोड़ देते हैं फिर भी जो कभी साथ नहीं छोड़ता, उसी अपने-आपको 'मैं' रूप में जानना है यही लक्ष्य बनाओ। 'मैं' को विभु-व्याप्त रूप में जान लो सद्गुरु की कृपा से। **मिलइ जो संत होइँ अनुकूला।** पति, पत्नी, मित्र, समाज की सेवा भी उसी उद्देश्य से करो। लक्ष्य ऊँचा हो जाय और उसमें दृढ़ हो गये तो हँसते-खेलते आप पा सकते हैं। कठिन नहीं है और फिर संसार में भी आपको कमी नहीं रहेगी।

एक कम पढ़े हुए व्यक्ति बहुत सारी संस्थाओं में ऊँचे पदों पर थे। एक महात्मा ने पूछा : ''भाई ! राजासाहब ने फलानी समिति में आपको लिया है और कभी-कभी बड़े अमलदार भी आपकी सलाह लेते हैं। आप इतने पढ़े-लिखे तो नहीं हो, फिर भी इतने सफल कैसे हो रहे हो ?''

व्यक्ति बोला : ''**लोग सोचते हैं कि इस गली से जायेंगे, उस कपट से जायेंगे लेकिन मैं शांत होकर सद्भाव से सीधा चला जाता हूँ और इसीसे मुझे सत्प्रेरणाएँ होती हैं।** स्वामी विवेकानंद ने कहा था : 'अगर मुझे फिर से पढ़ना पड़े तो दो ही विषय पढ़ूँगा - एकाग्रता और अनासक्ति।'

मैं एकाग्रता का अभ्यास और स्वार्थरहित कर्म करता हूँ बस। एकाग्रता और अनासक्ति से मुझे सब जगह सफलता मिल जाती है और मैं बड़ा प्रसन्न रहता हूँ। जितनी संस्थाओं में मैं पदों पर हूँ उतने मेरे पास प्रमाणपत्र अथवा उतनी मेरी योग्यता नहीं है, लेकिन ये दो योग्यताएँ सत्संग में सुनी थीं गुरु की कृपा से। मैं अपने लक्ष्य पर डटा हूँ, गुरु से वफादार हूँ, अपने-आपसे वफादार हूँ। अपने को दबाकर अशुद्ध करने से आदमी बेवफा होता है, अपनी ही नजरों में गिर जाता है। अपना आत्मा ही कोसता रहे ऐसा काम मैं नहीं करता हूँ। एकाग्र होने के लिए प्रतिदिन कुछ समय एकटक देखते हुए मन में गुरुमंत्र जपता हूँ, ध्यान करता हूँ, निष्कामता का चिंतन करता हूँ और गुरु से सम्पर्क बनाये रखता हूँ। मेरे गुरुजी की प्रेरणा और गुरुजी का उद्देश्य मेरे साथ मानसिक रूप से जुड़ जाते हैं।''

मैं (पूज्य बापूजी) भी मेरे गुरुजी से मानसिक रूप से जुड़ा हूँ तो बहुत लाभ हुआ है। ❑

अच्छाई-बुराई की वास्तविकता

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं ।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥

(श्री रामचरित. सुं.कां. : ३९.३)

अच्छाई-बुराई सबके अंदर छुपी है। अच्छाई को बढ़ाते जाओ तो बुराई भाग जायेगी। बुराई को बढ़ाते जाओ तो अच्छाई भागेगी नहीं, अच्छाई दबी रहेगी क्योंकि परमात्मारूपी तुम्हारा मूल स्वरूप अच्छाई से भरा है। जीव कितना भी पापी, पामर हो जाय फिर भी उसके अंदर से अच्छाई नष्ट नहीं होती। बुराई मिथ्या है, अच्छाई वास्तविकता है। कितना भी बुरा आदमी हो उसमें कुछ-न-कुछ अच्छाई रहेगी ही, अच्छाई को नष्ट नहीं कर सकता कोई। अच्छाई ईश्वरत्व है और बुराई विकार है।

विकार की जिंदगी लम्बी नहीं है। भगवान शाश्वत हैं, विकार शाश्वत नहीं हैं। आप सतत दो-चार घंटे क्रोधी होकर दिखाओ, चलो एक घंटा ही क्रोधी होकर दिखाओ, नहीं हो सकता। दो घंटे आप सतत कामी होकर दिखाओ, नहीं हो सकता। कामविकार के समय में दो घंटे आप उसी भाव में नहीं रह सकते, क्रोध में दो घंटे नहीं रह सकते लेकिन शांति में आप वर्षों तक रह सकते हैं, आनंद में वर्षों तक रह सकते हैं। **आनंद तुम्हारी असलियत है, अमरता तुम्हारी असलियत है, सज्जनता तुम्हारी असलियत है, पवित्रता तुम्हारी असलियत है क्योंकि तुम परमात्मा के वंशज हो, विकारों के वंशज नहीं हो बिल्कुल पक्की बात है।** विकार धोखा है, आने-जानेवाला है। काम आया तुम कामी हो गये, काम चला गया तुम शांत। क्रोध आया तुम क्रोधी हो गये, क्रोध चला गया तुम वही-के-वही, मोह आया तुम मोहित हुए फिर तुम वही-के-वही, चिंता आयी तुम चिंतित हो गये फिर तुम वही-के-वही। तुम शाश्वत हो ये आने-जानेवाले हैं, इनका गुलाम क्यों मानते हो अपने को ?

अपनी असलियत को जान लो कि आप वास्तव में कौन हो, आपका वास्तविक स्वरूप क्या है, आप कितने महिमावान हो, आप कितने धनवान हो। आप अपनी महिमा को नहीं जानते इसीलिए परेशान रहते हो। सात्त्विक साधना और अपने दिव्य आत्मस्वभाव के प्रभाव को आप नहीं जानते। यह जानते हुए भी कि परिस्थितियाँ सदा एक जैसी नहीं रहती हैं, आप परिस्थितियों के गुलाम हो जाते हो।

मानव तुझे नहीं याद क्या
तू ब्रह्म का ही अंश है ।
कुल-गोत्र तेरा ब्रह्म है, सद्ब्रह्म का तू वंश है ॥
संसार तेरा घर नहीं, दो चार दिन रहना यहाँ ।
कर याद अपने राज्य की,
स्वराज्य निष्कंटक जहाँ ॥ ❑

आध्यात्मिक टॉनिक

सही करने से विद्यमान राग की निवृत्ति हो जाती है और पाने के लालच तथा करने की रुचि के त्याग की योग्यता भी आ जाती है। जब तक हम गलत करते रहेंगे, तब तक न तो हमारा राग ही मिटेगा और न हम करने-पाने के चक्कर से मुक्त ही होंगे। इसलिए पहले सही करना सीखो और उसका भी फल मत चाहो। चाहरहित होने पर मनुष्य को योग की सिद्धि मिलती है, यानी शांति की प्राप्ति होती है।

गुरुभक्ति-योग

- ब्रह्मलीन स्वामी शिवानंदजी

गुरुभक्तियोग के अंश

❋ गुरुभक्तियोग माना सद्गुरु को सम्पूर्ण आत्मसमर्पण (अहं समर्पण) करना ।

❋ गुरुभक्तियोग के आठ महत्त्वपूर्ण अंग इस प्रकार हैं :

(क) गुरुभक्तियोग के अभ्यास के लिए सच्चे हृदय की स्थिर महेच्छा ।

(ख) सद्गुरु के विचार, वाणी और कार्यों में सम्पूर्ण श्रद्धा ।

(ग) गुरु के नाम का उच्चारण और गुरु को नम्रतापूर्वक साष्टांग प्रणाम ।

(घ) सम्पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ गुरु के आदेशों का पालन ।

(ङ) फलप्राप्ति की इच्छा बिना सद्गुरु की ईमानदारी से सेवा ।

(च) भक्तिभावपूर्वक हररोज सद्गुरु के चरणकमलों की पूजा ।

(छ) सद्गुरु के दैवी कार्य के लिए आत्मसमर्पण.... तन, मन, धन समर्पण ।

(ज) गुरु की कल्याणकारी कृपा प्राप्त करने के लिए एवं उनका पवित्र उपदेश सुनकर उसका आचरण करने के लिए सद्गुरु के पवित्र चरणों का ध्यान।

❋ गुरुभक्तियोग योग का एक स्वतंत्र प्रकार है ।

❋ मुमुक्षु जब तक गुरुभक्तियोग का अभ्यास नहीं करता, तब तक ईश्वर के साथ एकरूप होने के लिए आध्यात्मिक मार्ग में प्रवेश करना उसके लिए सम्भव नहीं है ।

❋ जो व्यक्ति गुरुभक्तियोग की फिलॉसफी (तत्त्वज्ञान) समझता है, वही गुरु को बिनशर्ती आत्मसमर्पण कर सकता है ।

❋ जीवन के परम ध्येय अर्थात् आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति गुरुभक्तियोग के अभ्यास द्वारा ही हो सकती है ।

❋ गुरुभक्ति का योग सच्चा एवं सुरक्षित योग है, जिसका अभ्यास करने में किसी भी प्रकार का भय नहीं है ।

❋ आज्ञाकारी बनकर गुरु के आदेशों का पालन करना, उनके उपदेशों को जीवन में उतारना यही गुरुभक्तियोग का सार है ।

गुरुभक्तियोग का हेतु

❋ मनुष्य को पदार्थ एवं प्रकृति के बंधनों से मुक्ति दिलाना और गुरु को सम्पूर्ण आत्मसमर्पण करके 'स्व' के अबाध्य-स्वतंत्र स्वभाव का भान कराना, यह गुरुभक्तियोग का हेतु है ।

❋ जो व्यक्ति गुरुभक्तियोग का अभ्यास करता है वह बिना किसी विपत्ति के अहंभाव को निर्मूल कर सकता है, मलिन संसार-सागर को बहुत सरलता से पार कर जाता है और अमरत्व एवं शाश्वत सुख प्राप्त करता है ।

❋ गुरुभक्तियोग मन को शांत एवं निश्चल बनानेवाला है ।

❋ गुरुभक्तियोग दिव्य सुख के द्वार खोलने की अमोघ कुंजी है ।

❋ गुरुभक्तियोग के द्वारा सद्गुरु को अपना अहं समर्पित करना, मनमानी छोड़ उनकी 'हाँ' में 'हाँ' करके कल्याणकारी कृपा प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य है । ☐

आरोपों की वास्तविकता

(जनहित में प्रसारित)

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय संस्कृति के विरोधियों ने संस्कृति के आधारस्तम्भ संतों-सत्पुरुषों को विशेषरूप से निशाना बनाना शुरू किया है। संत श्री आसारामजी बापू एवं उनके आश्रम, जो सत्संग के साथ सेवायोग द्वारा मानवमात्र के उत्थान में लगे हैं, उनके पीछे कुछ विधर्मी तत्त्व काफी लम्बे समय से पड़े हुए हैं - यह आम जनता पहले ही जान चुकी थी। अभी हाल ही में एक स्टिंग ऑपरेशन में उन स्वार्थी तत्त्वों की घृणित साजिशों का पर्दाफाश हो जाने से तो यह सुस्पष्ट हो गया है कि उन्होंने संतों पर कीचड़ उछालने का ठेका ही ले रखा है। प्रस्तुत हैं वे आरोप एवं उस संदर्भ में वास्तविकता :-

आरोप १ :- जुलाई २००८ में अहमदाबाद गुरुकुल के दो बच्चों की आकस्मिक मृत्यु के संदर्भ में स्वार्थी तत्त्वों द्वारा उकसाये जाने पर बच्चों के परिजनों ने आश्रम में तांत्रिक क्रिया एवं काले जादू के कारण बच्चों की मौत का आरोप लगाया।

खंडन :- परिजनों की माँग पर शासन ने सी.आई.डी. (क्राइम) तथा एफ.एस.एल. की एक बड़ी टीम से जाँच करायी। सी.आई.डी. (क्राइम) के डी.आई.जी. श्री जी. एस. मलिक ने पचीसों मीडियाकर्मियों, फोटोग्राफरों तथा पुलिस बल के एक बड़े दल के साथ आश्रम का कोना-कोना, चप्पा-चप्पा छान डाला किंतु उन्हें कोई भी चीज आपत्तिजनक नहीं मिली और उन्होंने मीडिया के समक्ष स्पष्ट घोषणा की कि आश्रम में कोई तांत्रिक क्रिया व काला जादू नहीं होता है। सी.आई.डी. (क्राइम) ने उच्च न्यायालय में दायर किये गये शपथ-पत्र में स्पष्टरूप से लिखा है कि आश्रम में काला जादू नहीं होता। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी स्पष्ट लिखा है कि बच्चों की मौत पानी में डूबने से हुई है तथा कोई भी 'एन्टी मोर्टेम इंजरी' (मृत्यु पूर्व की चोट) नहीं पायी गयी, अपितु मृतदेह को जानवरों ने नोचा था। चिकित्सा-विशेषज्ञों के दल ने भी यही अभिप्राय दिया है कि बच्चों की मृत्यु पानी में डूबने के कारण ही हुई है।

विशेष :- कुप्रचारकों ने लगातार आधारहीन भ्रामक प्रचार तो बढ़ा-चढ़ाकर किया किंतु वस्तुस्थिति प्रकाश में आने पर उसे समाज से छिपाया। साजिशकर्ताओं ने मीडिया को भी गुमराह किया। आइये देखें, कैसे संत श्री आसारामजी बापू एवं उनके आश्रम पर एक के बाद एक झूठे आरोप लगाये गये।

आरोप २ :- दिनांक १०.८.२००८ को एस.आर. शर्मा, निवासी गाँव गालानाड़ी सिणधरी, तह. गुड़ामालानी, जिला बाड़मेर (राजस्थान) ने मीडिया के माध्यम से आरोप लगाया कि उसकी पत्नी शांति देवी व बेटी पूजा को आसारामजी बापू ने अपने एक साधक के द्वारा तांत्रिक प्रयोग कराके आश्रम में कैद कर रखा है। यह खबर गुजरात के अखबारों में दिनांक ११.८.२००८ को छपी थी।

खंडन :- दिनांक ११.८.२००८ को ही दोपहर १.५० बजे आश्रम परिसर में स्वप्रेरणा से उपस्थित होकर एस.आर. शर्मा की पत्नी श्रीमती शांति देवी एवं बेटी पूजा ने 'जी न्यूज', 'टी.वी.९', 'भारत की आवाज' आदि अनेक चैनलों के कैमरों तथा संवाददाताओं के समक्ष इस आरोप का खंडन करते हुए बताया कि उन्हें एस.आर. शर्मा ने मारपीटकर घर से निकाल दिया है तथा वे आश्रम में नहीं रहतीं बल्कि पूजा के पति विमलेश के साथ राजस्थान में रहती हैं। शांति देवी ने पुनः स्पष्ट किया कि ''जब हम आश्रम में रहती ही नहीं हैं तो फिर तांत्रिक प्रयोग करके आश्रम में कैद करने का आरोप ही क़ैसे लगाया जा सकता है ! यह आरोप पूर्णतः झूठा है। हमारे घरेलू मामलों से बापूजी एवं आश्रम का कोई लेना-देना नहीं है।''

विशेष :- आरोपों को तो बढ़ाचढ़ाकर आप सब प्रबुद्ध लोगों तक पहुँचाया गया किंतु खंडन को जानबूझकर छिपाया गया। आखिर

यह पक्षपात क्यों ? सत्य को जानना प्रबुद्ध जनता का मौलिक अधिकार है । आइये, आपको अगले आरोप से अवगत करायें ।

आरोप ३ :– राजेश सुखाभाई सोलंकी नामक शख्स ने १४.८.२००८ को मीडिया में खबर देकर आरोप लगाया कि उसकी पत्नी बकुला जो कि संस्कृत में गोल्ड मेडलिस्ट है, उसे बापू के जहाँगीरपुरा, सूरत स्थित आश्रम में नजरबंद करके रखा गया है और उससे तंत्र-मंत्र करवाया जाता है। राजेश ने यह भी कहा कि गुलाब भाई, जो सूरत आश्रम में रहते हैं, आश्रम के मुख्य तांत्रिक हैं। राजेश ने पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईं पर अपने अपहरण का आरोप भी लगाया।

खंडन :– वस्तुतः राजेश सोलंकी धोखाधड़ी के आरोप में १८ माह की जेल की सजा काट चुका कुप्रसिद्ध ठग है । उसकी पत्नी बकुला ने दिनांक १५.८.२००८ को शपथ-पत्र के साथ मीडिया, जिसमें स्टार न्यूज, जी न्यूज, सहारा न्यूज, टी.वी.९, ई टी.वी. आदि शामिल थे, के रिपोर्टरों के समक्ष इन आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि न तो वह संस्कृत में गोल्ड मेडलिस्ट है और न ही उसने बापूजी का सूरत का या अन्य कोई आश्रम देखा है । वह तो पाँच महीनों से डिंडोली (गुजरात) में अपनी मौसी के यहाँ रह रही है क्योंकि उसका पति राजेश उसे शारीरिक-मानसिक रूप से प्रताड़ित करता था ।

कोई नौकरी-धंधा नहीं वरन् ठगी करना ही राजेश का मुख्य कार्य रहा है । उसके गाँव कांगवई, जिला नवसारी (गुजरात) के सरपंच ने लिखित रूप से दिया कि राजेश ने अपने-आपको डिप्टी कलेक्टर बताकर कई बार ठगी की है । बकुला से भी डिप्टी कलेक्टर बताकर ठगी करके शादी की थी । बकुला ने बताया कि उसके पति को बापू का कोई विरोधी मिल गया है एवं अच्छी-खासी धनराशि मिली है, इसीलिए वह बापू को बदनाम करने की साजिश कर रहा है । उसे ठगी के आरोप में अदालत द्वारा डेढ़ वर्ष की सजा भी हो चुकी है ।

गुलाब भाई बकुला के बहनोई हैं और उन्होंने अपने शपथ-पत्र में कहा है कि वे बापूजी के किसी भी आश्रम में कभी गये नहीं हैं और उनके किसी भी साधक को पहचानते भी नहीं हैं । राजेश के समस्त आरोप झूठे एवं मनगढ़ंत हैं । राजेश ने द्वेषवश उन्हें बदनाम करने के लिए ही उनका नाम भी जोड़ दिया है । (बकुला व गुलाब भाई के शपथ-पत्र आज भी आश्रम के पास सुरक्षित हैं, जो चाहे इन्हें देख सकता है । ये सब मीडियाकर्मियों को भी दिये गये थे ।)

पुलिस-जाँच में राजेश के सभी आरोप बेबुनियाद साबित हुए । उसके काले कारनामों ने उसे पुनः जेल की सलाखों के पीछे पहुँचा दिया ।

विशेष :– आप तक राजेश सोलंकी के झूठे, निराधार आरोप तो कुछ लोगों ने खूब मिर्च-मसाला लगाकर जनता तक पहुँचाये परंतु हकीकत बतानेवाला बकुला का लिखित बयान नहीं पहुँचाया । जिन्होंने भी उसे जनता तक पहुँचाने का दायित्व निभाया था, उन्हें तो धन्यवाद ! आइये, आगे और जानें ।

आरोप ४ :– दिनांक १४.८.२००८ को सिर से लेकर पैर तक पूरी तरह बुरके में ढकी एक औरत, जिसने न अपना नाम बताया न पता, उसने बापूजी पर यौन-उत्पीड़न के अनर्गल आरोप लगाये । उस औरत को पेश करनेवाला व्यक्ति था - आश्रम से निष्कासित वैद्य अमृत प्रजापति ।

खंडन :– अमृत वैद्य ने बुरकेवाली औरत को पेश करके मीडिया के समक्ष कहा था कि यह पंजाब से आयी है और मैं इसे नहीं जानता हूँ । बाद में पुलिस जाँच के दौरान सूरत के रांदेर पुलिस थाने में स्वयं अमृत वैद्य ने ही बयान देकर स्वीकार किया कि बापू के खिलाफ झूठे आरोप लगाने के लिए उसने अपनी ही पत्नी सरोज को बुरका पहनाकर मीडिया के सामने खड़ा किया था । (उसके इस लिखित बयान का दस्तावेज भी आश्रम के पास सुरक्षित है, उसे जो चाहे देख सकता है ।) अपनी ही पत्नी को बुरका पहनाकर सुकुमारी बनाके आरोप लगाने के लिए खड़ी करना... कितनी नीचता है साजिशकर्ता और उनके हथकंडों की !

विशेष :– आश्रम में मरीजों की चिकित्सा-सेवा में संलग्न अमृत वैद्य के खिलाफ जब मरीजों की ढेरों शिकायतें आने लगीं, जैसे - मरीजों से

पैसे लूटना, उन्हें निजी पंचकर्म अस्पतालों में भेजकर व अकारण महँगी दवाइयाँ लिखकर कमीशन वसूल करना, गलत उपचार कर मरीजों को गुमराह करना, महिला मरीजों से जाँच के बहाने अभद्र व्यवहार करना आदि-आदि, तब उसे सन् २००५ में आश्रम से निष्कासित करना पड़ा । इसीसे द्वेषवश उसने अपनी पत्नी को बुरका पहनाकर उसके द्वारा बापूजी पर झूठे, घिनौने आरोप लगवाये ।

एक ऐसे संत जो पिछले ४०-४५ वर्षों से देश, समाज एवं संस्कृति की सेवा में अपना सर्वस्व न्योछावर कर सेवारत हैं, उन पर कोई भी राह चलती महिला अपनी पहचान पूर्णतया छुपाकर इस प्रकार के झूठे आरोप लगाये और बिना सोचे-समझे उन्हें समाज में उछाला जाय और फिर बिना किसी ठोस प्रमाण के तूल भी दे दिया जाय, यह सब ऐसे महान संत पर अत्याचार की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है ! क्यों समाज तक सत्य नहीं पहुँच पाता ? कृपया विचार करें । इतना सब कुछ होने के बावजूद भी प्रशासन ने आश्रम के निवेदनों को कोई महत्त्व नहीं दिया । परिणामतः नये आरोप आपके सामने हैं ।

आरोप ५ :- नयी साजिश के तहत अब एक तथाकथित अघोरी तांत्रिक कैमरे के सामने आया । उसने दिनांक २६.८.२००८ को एक ऑडियो रिकार्डिंग जारी करके मीडिया के समक्ष आरोप लगाया कि आसारामजी बापू ने मुझे छः लोगों को मारने की सुपारी दी है ।

खंडन :- अघोरी उर्फ सुखाराम औघड़ उर्फ प्रीस्ट सुखविन्द्र सिंह उर्फ हरविन्द्र सिंह उर्फ सुक्खा ठग... जितने नाम उतनी ही जिसकी पत्नियाँ हैं, ऐसे अंतर्राष्ट्रीय ठग सुक्खा की हकीकत 'प्रेस की ताकत' आदि अनेक समाचार पत्रों में विस्तार से छप चुकी है । 'ए टू जेड' चैनल पर दिखाये गये षड्यंत्रकारी राजू लम्बू के स्टिंग ऑपरेशन में सामने आये तथ्यों में राजू ने स्वयं स्पष्टरूप से कहा है कि कैसे उसने अघोरी को ४० हजार रुपये, शराब व बाजारू लड़कियाँ दिलाकर और मीडिया का सहारा लेकर अघोरी द्वारा बापू पर सुपारी देने का आरोप लगवाया । 'साजिश का पर्दाफाश' वी.सी.डी. आश्रम में उपलब्ध है, जिसमें इस साजिश का विस्तारपूर्वक खुलासा किया गया है और इसे कोई भी देख सकता है ।

विशेष :- राजू लम्बू ने छुपे कैमरे के सामने बड़े मजे से बताया कि वही अघोरी को लेकर आया और पाँच दिन तक उसे अहमदाबाद में रखा । उसे रोज शराब की बोतलें तथा व्यभिचार के लिए बाजारू लड़कियाँ देकर छठे दिन 'संदेश' (समाचार पत्र) वालों के हवाले कर दिया । सातवें दिन दिल्ली लेकर गया जहाँ अघोरी को इंडिया टी.वी. के हवाले किया । फिर राजू लम्बू मीडिया का मजाक उड़ाते हुए कहता है : ''मीडिया तो बच्चा है, तुम जो कुछ उसे दो वह उसे उछाल देगा । उसकी टी.आर.पी. बढ़ गयी, उसका तो काम हो गया ।''

आरोप ६ :- महेन्द्र चावला नामक शख्स ने आरोप लगाये कि नारायण साँईं तंत्र-मंत्र करते हैं ।

खंडन :- महेन्द्र चावला के बड़े भाई श्री तिलक चावला ने महेन्द्र की पोल खोलते हुए मीडिया में कहा कि आठवीं पास होने के बाद महेन्द्र की आदतें बिगड़ गयी थीं । वह चोरियाँ करता था । एक बार वह घर से ७००० रुपये लेकर भाग गया था । उसने खुद के अपहरण का नाटक भी किया था और बाद में झूठ को स्वीकार कर लिया था । इसके बाद वह आश्रम में गया । हमने सोचा वहाँ जाकर सुधर जायेगा लेकिन उसने अपना स्वभाव नहीं छोड़ा । और अब तो कुछ स्वार्थी असामाजिक तत्त्वों के बहकावे में आकर वह कुछ-का-कुछ बक रहा है । उसे जरूर १०-१५ लाख रुपये मिले होंगे । नारायण साँईं के बारे में उसने जो अनर्गल बातें बोली हैं वे बिल्कुल झूठी व मनगढ़ंत हैं । हम साल में दो-तीन बार अहमदाबाद आश्रम में जाते हैं और लगातार महीने भर के लिए भी वहाँ रह चुके हैं लेकिन कभी ऐसा कुछ नहीं देखा-सुना ।

महेन्द्र के भाइयों ने बताया कि आश्रम से आने के बाद किसीके पैसे दबाने के मामले में महेन्द्र के खिलाफ एफ.आई.आर. भी दर्ज हुई थी । मार-पिटाई व झगड़ाखोरी उसका स्वभाव है । महेन्द्र के साथ ४-५ लोगों का गैंग है । दूसरों की आवाज की नकल कर ये लोग पता नहीं क्या-क्या साजिश रच रहे हैं !

आरोप ७ :- आरोप लगाया गया कि आश्रम

ने जमीनों पर अवैध कब्जा कर रखा है।

खंडन :- आश्रम ने जमीनों पर कोई भी अवैध कब्जा नहीं किया है। इस संदर्भ में समय-समय पर 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका (अंक २०५, १८८, १६९ आदि) में वास्तविकता का बयान किया गया है। स्थानाभाव के कारण उसकी पुनरुक्ति नहीं की जा रही है।

आरोप ८ :- दिनांक २६.११.२००९ को पुलिस प्रशासन ने आरोप लगाया कि साधकों ने पुलिस पर हमला किया।

खंडन :- लगातार लगाये जा रहे झूठे आरोपों एवं किये जा रहे घृणित, अश्लील कुप्रचार की सप्रमाण पोल खुलने के बावजूद भी प्रशासन द्वारा साजिशकर्ताओं के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जाने के कारण साधकों ने शांतिपूर्ण प्रतिवाद रैली निकालकर कलेक्टर को ज्ञापन देना चाहा तो कुप्रचारकों के सुनियोजित षड्यंत्र के तहत 'संदेश' अखबार और कुप्रचारकों के गुंडों ने साधकों के वेश में रैली में घुसकर पुलिस पर पत्थर फेंके। पुलिस ने सत्य को जानने के लिए कोई सावधानी नहीं बरती तथा २३४ निर्दोष साधकों एवं आम जनता, जिसमें अनेकों महिलाएँ, छोटे बच्चे व वयोवृद्ध लोग भी थे, उन पर न सिर्फ लाठियाँ बरसायीं बल्कि आँसूगैस के साठ गोले और आठ हैण्डग्रेनेड छोड़े जैसे ये आम जनता न हो, कोई खूँखार देशद्रोही अथवा आतंकवादी हों। उन पर हत्या से संबंधित धारा ३०७ सहित कुल १४ धाराएँ लगाकर उन्हें जेल में डाल दिया गया। इसके बाद दिनांक २७.११.२००९ को स्वयं पुलिस ने ही आश्रम पर हमला बोल दिया और २०० से अधिक निर्दोष साधकों को २६ घंटे तक बिना एफ.आई.आर., बिना किसी केस के बंदी बनाकर अकारण ही गम्भीर शारीरिक पीड़ाएँ, भयंकर मानसिक यातनाएँ एवं घृणित भावनात्मक प्रताड़नाएँ दीं। एक दिन बाद १९२ साधकों को छोड़ दिया गया। यदि ये साधक निर्दोष थे तो इन्हें बंदी क्यों बनाया और दोषी थे तो छोड़ा क्यों? क्या प्रशासन के पास इसका कोई भी जवाब है? इसी घृणित अत्याचार के विरुद्ध स्थानीय पुलिस थाने में संस्था द्वारा एफ.आई.आर. दर्ज करवाने हेतु आवेदन भी दिया गया, किंतु पुलिस द्वारा न तो कोई एफ.आई.आर. दर्ज की गयी और न ही कोई कार्यवाही की गयी। अतः अब संस्था को न्यायालय के द्वार खटखटाने पड़े हैं।

आरोप ९ :- दिनांक ५.१२.२००९ को रात्रि में राजू चांडक उर्फ राजू लम्बू के साथ हुए तथाकथित गोलीकांड के संबंध में दिनांक ६.१२.२००९ को राजू ने आरोप लगाया कि आश्रम के दो साधकों ने उस पर गोली चलाकर उसकी हत्या का प्रयास किया। आसारामजी बापू के इशारे पर उस पर गोलियाँ चलायी गयी हैं।

खंडन :- (क) वर्षों से दीन-दुःखियों एवं मानवमात्र की सेवा में रत पूज्य बापूजी परदुःखकातर एवं करुणा के सागर हैं और ऐसे संत का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से हिंसा से कोई प्रयोजन नहीं होता।

(ख) कथित गोलीकांड के समग्र घटनाक्रम में ऐसे अनेक तथ्य एवं विरोधाभास हैं, जो इस गोलीकांड को संदेहास्पद बना देते हैं। जैसे - राजू को तीन गोलियाँ लगने पर वह उस अवस्था में भी बाइक कैसे चलाता रहा ? और वह गोलियों से घायल होने पर भी अस्पताल के बदले घर क्यों गया ? घर से एक निजी अस्पताल में दाखिल होने के बाद फिर तुरंत ही उसे उस अस्पताल से काफी दूर दूसरे निजी अस्पताल में क्यों ले जाया गया ?

(ग) राजू ने एक साधक गजानन पर अपने ऊपर हुए इस हमले का आरोप लगाया। पुलिस अधिकारियों ने सघन जाँच-पड़ताल की और गजानन को निर्दोष पाया।

(घ) इस समग्र घटनाक्रम पर टिप्पणी करते हुए म.प्र. की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती कहती हैं : ''राजू, जिसने स्टिंग ऑपरेशन में स्वयं ही अपने गुनाह कबूल कर लिये हैं, उसका जीना तो सच को अदालत में साबित करने के लिए जरूरी है तो उसे मरवाने की कोशिश आश्रम क्यों करेगा ?''

शरीर में जैसे रॉड फिट करा देते हैं ऐसे ही गोली फिट कराके दोषारोपण का नाटक भी अब खुलने की कगार पर है। क्राइम विभाग के कोई मर्द

अधिकारी गोली लगने की साजिश की पोल प्रजा के आगे खोलकर अपनी सच्चाई व सेवा की मिसाल रखें तो कितना अच्छा होगा ! यह स्पष्ट है कि राजू चांडक के द्वारा विद्वेषपूर्वक लिखवायी गयी एफ.आई.आर. कानून का दुरुपयोग कर पूज्य बापूजी को कानूनी जाल में फँसाने के लिए रची गयी एक सोची-समझी साजिश है ।

इस तरह एक-एक करके सब आरोप निराधार व खोखले साबित होते गये, फिर नये-नये आरोप लगाये गये ।

'ए टू जेड' चैनल के वरिष्ठ संवाददाता ने बताया कि ''संत श्री आसारामजी बापू पर लगाये जा रहे आरोपों के पीछे जो षड्यंत्रकारी हैं, वे अब सामने आ गये हैं । यह बिल्कुल सही समय है कि इस मामले पर ध्यान देकर पुलिस तुरंत कार्यवाही करे। मैं पूरी जिम्मेदारी से कह सकता हूँ कि मीडिया को इस्तेमाल करने की बात सामान्य है; पर यह तो एक व्यापक साजिश है जिसमें कई लोग हैं, जिसमें मीडिया भी एक इच्छुक खिलाड़ी है, यह मात्र टी.आर.पी. का खेल नहीं है । तमिलनाडु के कांची कामकोटि मठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी की घटना, उड़ीसा की घटना आदि को खेला गया है और अब बापू पर आरोप भी उसी व्यापक साजिश का हिस्सा है । इससे स्पष्ट तौर पर जाँचना होगा कि राजू लम्बू को किसने खड़ा किया ? किसने उसको समझाया कि ऐसा-ऐसा करना है और इस तरह साजिश करनी है ? यह सीधी-सी बात है कि इस तरह की साजिश करने में बहुत पैसा तथा बहुत समय लगता है और बहुत लोग भी लगते हैं । अतः वे सब लोग कौन हैं इसकी पूरी जाँच होनी चाहिए ।''

ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों पर झूठे आरोप लगाने एवं उन्हें कष्ट देने का यह पहला प्रसंग नहीं है । इतिहास साक्षी है कि गुरु गोविंदसिंहजी, ऋषि दयानंद, महात्मा बुद्ध, ईसामसीह जैसे कई महापुरुषों को उन्हींके आश्रय में रह चुके कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने साजिश रचकर कष्ट पहुँचाया । यथार्थ में देखें तो महापुरुषों का कुछ बिगड़ा नहीं और ऐसे दुष्टों का कुछ सँवरा नहीं क्योंकि परम लाभ के लिए तो महापुरुष का हृदय से सामीप्य अधिक महत्त्वपूर्ण होता है, न कि शरीर का सामीप्य । प्रकृति का सिद्धांत है कि वह ऐसे अभागे लोगों को उनके बुरे कर्मों का फल देर-सवेर अवश्य देती है ।

षड्यंत्रकारी एवं उन्हें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग करनेवाले मूढ़ लोग केवल समाजद्रोही, देशद्रोही ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता के द्रोही हैं । अतः मानवता के प्रहरी सज्जनों को हमेशा सजग रहने की आवश्यकता है ।

आज स्वामी विवेकानंदजी के नाम पर संस्थाएँ चल रही हैं, स्कूल-कॉलेज बने हैं, बड़े-बड़े मार्गों को उनका नाम दिया जा रहा है लेकिन जिन रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें स्वामी विवेकानंद बनाया, उनकी समाधि बनाने के लिए विवेकानंदजी को बंग प्रदेश के किसी भी श्रीमान ने जमीन का एक टुकड़ा तक नहीं दिया । जिन शिर्डी के साँई बाबा की आज बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ खड़ी की जा रही हैं, मंदिर बनाये जा रहे हैं, वे ही साँई बाबा जब हयात थे तो उन्हें कोई दो बूँद तेल नहीं दे रहा था, भिन्न-भिन्न ढंग से त्रस्त किया जा रहा था । ऐसे ही आज ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष संत श्री आसारामजी बापू और उनके आश्रम के संचालकों व सेवा करनेवाले पुण्यात्माओं पर झूठे आरोप लगाकर, उनके बारे में झूठी बातें फैलाकर कुछ लोगों द्वारा कुप्रचार किया जा रहा है । तो क्या हम अपने विवेक का उपयोग नहीं करेंगे ? एकतरफा, मनगढ़ंत आरोपों एवं कहानियों से भ्रमित होकर इन परमात्मा में सुप्रतिष्ठित ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष का लाभ लेने से वंचित रह जायेंगे अथवा उपरोक्त वास्तविकता को जानकर इन महापुरुष से लाभान्वित होके अपना कल्याण कर लेंगे ? जरा विचारें ।

प्रशासन को भी संतों के विरुद्ध हो रहे इतने भयंकर कुप्रचार के पीछे छिपे हुए असली खलनायकों को बेनकाब करना चाहिए तथा देश व समाज में अशांति फैलानेवाले इन देशद्रोहियों के खिलाफ अविलम्ब कठोर कार्यवाही करनी चाहिए । मीडिया के जो सज्जन उपरोक्त वास्तविकता को जनता तक पहुँचाने के मेरे इस प्रयास में सहभागी बनते हैं, उनको मैं हृदयपूर्वक धन्यवाद देती हूँ । - **नीलम दूबे** ❑

स्वर-चिकित्सा

श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया कभी दायीं नासिका से, कभी बायीं से तथा कभी दोनों नासिकाओं से चलती है। दायीं नासिका से चलनेवाला श्वास पिंगला नाड़ी से प्रवाहित होता है, इसे 'सूर्य स्वर' कहते हैं (प्रकृति - उष्ण)। बायीं नासिका से चलनेवाला श्वास इड़ा नाड़ी से प्रवाहित होता है, इसे 'चंद्र स्वर' कहते हैं (प्रकृति - शीत)। दोनों नासिकाओं से चलनेवाला श्वास सुषुम्ना नाड़ी से प्रवाहित होता है, इसे 'सुषुम्ना स्वर' कहते हैं (प्रकृति - समशीतोष्ण)। स्वर शरीर, मन व बुद्धि को प्रभावित करते हैं। सूर्य स्वर शारीरिक कार्य, चंद्र स्वर मानसिक कार्य व सुषुम्ना स्वर आध्यात्मिक कार्यों का प्रेरक व नियामक है।

स्वर-क्रम : स्वस्थ व्यक्ति में सूर्योदय के समय से प्रति साठ या अस्सी मिनट पश्चात् स्वर स्वाभाविक रूप से परिवर्तित होता है। स्वर का यह लयबद्ध परिवर्तन शरीर में सौम्य (शीतल) व आग्नेय तत्त्व का संतुलन बनाये रखता है। स्वरोदय शास्त्र के अनुसार शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से पूर्णिमा तक तीन-तीन दिन के अंतर से प्रथम चंद्र स्वर प्रवाहित होता है व कृष्णपक्ष में प्रतिपदा से अमावस्या तक तीन-तीन दिन के अंतर से प्रथम सूर्य स्वर प्रवाहित होता है। यदि इन तिथियों को नियम के विरुद्ध स्वर प्रवाहित होता हो तो वह सम्भावित व्याधि का सूचक है। सूर्योदय के समय तिथि-अनुसार अपने स्वर का परीक्षण कर हमें उत्पन्न होनेवाले रोग की पूर्वसूचना मिल सकती है। जैसे - शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को सूर्योदय के समय यदि सूर्य स्वर चल रहा हो तो वह पित्तवृद्धि का सूचक है व कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को प्रथम चंद्र स्वर चल रहा हो तो वह कफवृद्धि का सूचक है। रोगनिदान की यह सरल व अचूक पद्धति है।

स्वर-परिवर्तन : नासिका के नीचे हाथ रखकर सक्रिय स्वर की जानकारी सहजता से प्राप्त की जा सकती है। स्वर बदलने के लिए सक्रिय स्वर को उँगली या पुरानी रूई के फाहे से ५-१० मिनट के लिए बंद कर दें। अथवा सक्रिय नासिकावाली काँख पर दूसरे हाथ द्वारा दबाव डालें या प्रवाहित स्वर के ओर की करवट लेकर लेट जायें। इससे विरुद्ध स्वर सक्रिय हो जायेगा।

स्वर व स्वास्थ्य का संबंध : बीमारी के आगमन के कुछ समय पूर्व ही स्वर-क्रम बाधित होता है। इस समय उचित स्वर को प्रवाहित कर रोग की तीव्रता को कम किया जा सकता है। कफ-वातजन्य रोगों में सूर्य स्वर व पित्तजन्य रोगों में चंद्र स्वर का उपयोग स्वास्थ्यप्रद है।

सही ढंग से सोने से भी दोषों को संतुलित किया जा सकता है। कफजन्य रोग व पाचनसंबंधी गड़बड़ियों में बायीं करवट व पित्तजन्य रोगों में दायीं करवट सोने से रोग-निवारण में मदद मिलती है।

स्वर-संतुलन : त्रिबंध लगाकर अर्धोन्मिलित नेत्र (शिवजी की तरह आँखें आधी खुली, आधी बंद) रखके दोनों नथुनों से गहरा श्वास लेकर सवा मिनट अंदर रोकें, फिर 'हरि ॐ' का प्लुत उच्चारण करते हुए श्वास छोड़ दें और ४० सेकंड बाहर रोके रखें। कम-से-कम ८-१० बार यह प्राणायाम करें। इससे सुषुम्ना नाड़ी दीर्घकाल तक सक्रिय रहती है तथा शारीरिक क्रियाएँ संतुलित होकर वाणी चांचल्य, नेत्र चांचल्य, हस्त चांचल्य, पाद चांचल्य नियंत्रित होता है। मन स्थिर, शांत व एकाग्र रहता है। संकल्प-विकल्प कम होके बुद्धि को विश्रांति मिलती है। इसे करके किया गया ध्यान-भजन शीघ्र सफल होता है।

अजपा गायत्री, ॐकार का दीर्घ उच्चारण व श्वास की गिनती से भी सुषुम्ना स्वर सक्रिय होता है, दोष निवृत्त होने में मदद मिलती है। निर्दोष

नारायण को पाने का संकल्प कर आधा-एक घंटा ध्यान, 'ईश्वर की ओर' एवं 'जीवन विकास' पुस्तकों व 'श्री योगवासिष्ठ' ग्रंथ का वाचन-मनन भी लाभदायी है। इससे व्यक्ति स्वास्थ्य-लाभ के साथ बुद्धि के दोष व मन की मलिन मान्यताएँ हटाकर आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक लाभ लेने में सक्षम हो जाता है।

षोडशोपचार से की पूजा से मानस पूजा १२ गुना फलदायी मानी जाती है। परम पूज्य बापूजी अपने सद्गुरुदेव की मानसिक पूजा करते थे। मानसिक संबंध द्वारा आध्यात्मिक संबंध जोड़ते थे। अतः हमें भी इसका लाभ उठाना चाहिए। इन्द्रियों का स्वामी मन व मन का स्वामी प्राण है। सवा मिनट अंदर व ४० सेकंड बाहर श्वास रोकने का उपर्युक्त प्राणायाम और गुरुदीक्षा के समय सूर्यस्नान आदि जो अन्य प्रयोग बताये जाते हैं, उनमें जरूर लग जाना है। आध्यात्मिक उन्नति करनी हो तो बापूजी के धीर-गम्भीर, एकांत सत्संग की कैसेट चलती रहे और हम एकाकार होते जायें।

कुछ खास बातें : १. सुबह दस-साढ़े दस बजे सूर्य स्वर चलता है। इस समय जठराग्नि तीव्रतम होती है। यह भोजन हेतु उचित समय है।

२. सुबह उठने के बाद जो स्वर चल रहा हो उस ओर का हाथ मुँह पर घुमाने व उस ओर का पैर पृथ्वी पर रखने से कार्य सफल होते हैं।

३. चंद्र स्वर चलते समय जलपान या मूत्रत्याग करने से एवं सूर्य स्वर चलते समय भोजन या मलत्याग से स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

४. भोजन के बाद थोड़ी देर बायीं करवट लेकर लेटने से सूर्य स्वर सक्रिय होता है। इससे अन्न-पाचन सुचारुरूप से होता है।

५. शारीरिक कार्य के समय सूर्य स्वर व मानसिक कार्य के समय चंद्र स्वर चलाने से कार्य करने में कठिनाई नहीं होती।

विशेष : शीत व उष्ण ऋतुओं के इस संधिकाल में किया गया स्वर-संतुलन का अभ्यास ऋतु-परिवर्तनजन्य व्याधियों से रक्षा करता है। ❐

संस्था समाचार

माघ मास में इस बार पूज्यश्री के पावन सान्निध्य से मध्य प्रदेश की धरा लाभान्वित हुई। यहाँ के गाँव-कसबे से लेकर शहर वासियों तक के दिल में पूज्य बापूजी के प्रति कितनी गहरी आस्था है, इसका परिचय मिला। पूज्यश्री के प्रवास के दौरान मार्ग में दर्जनों जगहों पर बड़ी संख्या में लोग स्वागत हेतु पलकें बिछाये खड़े मिलते। बापूजी के इस प्रवास से मानो सारा प्रदेश भगवदीय रस, भगवदीय शांति की तरंगों से तरंगायित हो उठा। सबसे पहले बाजी मारी हरदा समिति ने और **८ व ९ जनवरी** को **हरदा** में सत्संग व भंडारा हुआ। जीवन सार्थक बनाने की कुंजी देते हुए बापूजी बोले : ''भगवत्शरण और भगवत्स्मृति, भगवत्कथा तथा भगवज्जनों का संग मनुष्य-जीवन से अगर हटा दिया जाय तो मनुष्य जैसा कोई अभागा प्राणी नहीं मिलेगा और ये चार चीजें अगर मनुष्य-जन्म में हैं तो मनुष्य-जीवन से बढ़कर कोई जीवन है ही नहीं, था नहीं, हो सकता नहीं!''

९ (दोपहर) व १० जनवरी को **होशंगाबाद** की जनता सत्संग-वर्षा में सराबोर हुई। जीवन में श्रद्धा न हो तो मनुष्य के कर्म भी बंधनकारक ही होते हैं, यह तत्त्व प्रतिपादित करते हुए बापूजी बोले : ''जिसके जीवन में श्रद्धा नहीं है वह भले ही बड़े पद पर हो, अशांति की आग उसके चित्त को और वैर-वृत्ति की आग उसके कर्मों को धूमिल कर देगी।''

१० जनवरी की **शाम** का एक सत्र **मंडीदीप** के भक्तों की प्रार्थना पर चंद घंटे पहले ही घोषित हुआ और आश्चर्य को भी आश्चर्य हो इतना बड़ा जनसमुदाय यहाँ के सत्संग-प्रांगण में उपस्थित हुआ। मानो जनता पहले से ही पूज्यश्री के आगमन की ताक में थी। भगवद्भक्ति की धारा ऐसी बही कि न तो बापूजी को समय का भान रहा, न बापूजी के प्यारे भक्तों को... और रात्रि ९-३० बजे तक सत्संग-कीर्तन का सिलसिला चलता रहा। इससे पहले मार्ग में अब्दुल्लागंज की जनता को भी सत्संग-लाभ मिला।

१४ से १७ जनवरी तक धर्मनगरी **उज्जैन** में उत्तरायण शिविर सम्पन्न हुआ। इस बार का शिविर कुछ अनूठा रहा। उत्तरायण का महापर्व, भगवान महाकालेश्वर की पुण्यमयी नगरी, सूर्यग्रहण का अनुपम

योग और अति दुर्लभ ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु का सान्निध्य- इन चारों का संगम पाकर देश-विदेश से आये लाखों भक्त एवं उज्जैनवासी कृतकृत्य हुए। जैसे बछड़े को देखकर गौ वात्सल्य से भर जाती है, उसी प्रकार अपनी सारी सांसारिक सुख-सुविधाओं को छोड़कर अपने प्यारे बापूजी की एक झलक पाने को लालायित जनसैलाब को देखते हुए करुणासिंधु बापूजी का हृदय भर आया और पूज्यश्री अपनी एकांत की मस्ती छोड़कर शिविर से एक दिन पहले ही उनके बीच आ गये और दर्शन-सत्संग देकर उनका हृदय ईश्वरीय सुख में सराबोर कर दिया।

तीर्थभूमि उज्जैन और उत्तरायण पर्व के संयोग में अपनी सनातन भारतीय संस्कृति की महिमा का स्मरण आना स्वाभाविक ही था। बापूजी बोले : ''हमारे तीर्थस्थलों ने ही हमारी संस्कृति के इतिहास को सँजोये रखा है। गांधीजी कहते थे कि सिनेमा थिएटर बढ़ेंगे तो दर्शक बढ़ेंगे, होटल बढ़ेंगे तो चटोरे बढ़ेंगे, अस्पताल बढ़ेंगे तो बीमारियाँ बढ़ेंगी, चेकअप-चेकअप करके जेब खाली होगी, मंदिर और आश्रम बढ़ेंगे तो भक्त बढ़ेंगे, सज्जनता, सत्संग, भगवान की प्रीति और भक्ति बढ़ेगी, देश उन्नत होगा।''

जीवन में सहानुभूति को आवश्यक बताते हुए बापूजी बोले : ''अगर आपके पास धन की शक्ति है, सत्ता की शक्ति है, शरीर की शक्ति है- कोई भी शक्ति है और सहानुभूति का सद्गुण नहीं है तो आप दान नहीं कर सकते, वह धनादि आपको विलासिता में गिरायेगा। आप छोटे की सहायता नहीं करोगे। आपमें सहानुभूति नहीं है तो माँ-बाप की, बड़े-बुजुर्गों की और धर्म की सेवा नहीं करोगे; रावण, कंस, सीजर, हिटलर के रास्ते चलकर अपने को पिशाच योनि में ले जाओगे। लेकिन यदि आपके जीवन में राजा जनक की नाईं सहानुभूति, परदुःखकातरता का सद्गुण है तो ... राजा राम, राजा कृष्ण के रास्ते चलकर अपने लिए व दूसरों के लिए मधुमय हो जाओगे।''

इस पर्व का लाभ देश-विदेश के करोड़ों भक्तों ने इंटरनेट, अंतर्राष्ट्रीय व लोकल टी.वी. चैनल, ऑडियो-विडियो कॉन्फरेंसिंग आदि द्वारा लिया। समाचार पत्रों ने भी मुखपृष्ठों (फ्रंट पेजों) पर भर-भरके सत्संग दिया और वे समाचार पत्र लोगों के घरों में पूजा-पाठ के स्थान पर आदरपूर्वक रखे जाते हैं।

१९ व २० जनवरी को **सुसनेर** निवास के दौरान **२० जनवरी** के एक सत्र के सत्संग का सौभाग्य स्थानीय जनता को प्राप्त हुआ। **२१ व २२ जनवरी** को प्राचीन व ऐतिहासिक नगरी **नलखेड़ा** में बापूजी के सत्संग का लाभ श्रद्धालुओं को मिला। सत्संग-वचनामृत में आया : ''दुःख आये तो दूसरों के दुःख मिटाने में लग जाओ, फिर अपना दुःख छोटा हो जायेगा और दूसरे का दुःख मिटाने का आनंद आयेगा। दुःखी का दुःख देखकर तुम दुःखी हो जाओ और उसका दुःख मिटाने का प्रयत्न करो तो आपका दुःख टिकेगा नहीं। सुखी को देखकर प्रसन्न रहो तो आपको सुख का लालच नहीं रहेगा, आंतरिक सुख की प्राप्ति होगी। न सुख का लालच, न दुःख का भय... तो आपके अंदर भगवान ही रह गये।''

२३ व २४ जनवरी को **खिलचीपुर** में सत्संग-प्रसाद लुटाया गया। बापूजी बोले : ''हम लोगों में प्यार स्वाभाविक है। उस प्यार की दिशा मोड़ दो। प्यार धन में जाता है तो हम लोभी बनते हैं, प्यार अहं में जाता है तो हम अहंकारी बनते हैं लेकिन वही प्यार प्रभु में जाय तो हम भगवान के प्यारे हो जायेंगे।''

२४ जनवरी को एक ही दिन में खिलचीपुर के बाद **ब्यावरा, बीनागंज, आवन** आदि जगहों के लोगों को सत्संग-अमृत से परितृप्त करते हुए पूज्यश्री **गुना** पहुँचे। विशाल जनसमुदाय यहाँ के सत्संग पंडाल में प्रतीक्षारत बैठा था। बापूजी ने आते ही भगवन्नाम-कीर्तन में सभीको झुमा दिया। जहाँ एक तरफ दूर-दराज के गाँवों से लोग आ रहे थे, वहीं गुना के जनप्रतिनिधियों से लेकर आम जनता तक के आकर्षण का केन्द्र बन चुका था यह सत्संग-कार्यक्रम। गुनावासियों को प्रभुप्रेम-रस का चस्का कुछ ऐसा लगा कि सभीके विशेष आग्रह, अनुनय-विनय के चलते सत्संग का एक दिन और बढ़ाना पड़ा और **२६ जनवरी** तक **गुना** में सत्संग चला।

महानता की कुंजी बताते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''सत्ता या विद्या होने से ही कोई सेवा कर सकता है, धन होने से ही कोई निर्दुःख होता है ऐसी बात नहीं है। कुछ भी न हो, केवल सद्भाव, सत्संग हो और भगवान अपने लगें बस! फिर वह शबरी की नाईं अबला हो, सुकरात, अष्टावक्रजी की नाईं कुरूप हो तो भी वह व्यक्ति महान-से-महान बन सकता है।'' ❑

होशंगाबाद के लोगों में जीवन को मधुमय बनाने की कुंजियाँ लुटाते हुए पूज्य बापूजी।
होशंगाबाद (म.प्र.)
भगवान श्रीकृष्ण को अपने पास पाकर अर्जुन को जिस हर्ष और परमानंद की अनुभूति हुई थी वैसा ही अनुभव हुआ होशंगाबाद के श्रद्धालुओं को पूज्यश्री को अपने बीच पाकर।
अपने प्यारे बापूजी को अपने मध्य पाकर होशंगाबाद की जनता आनंदित-उल्लसित हो उठी।
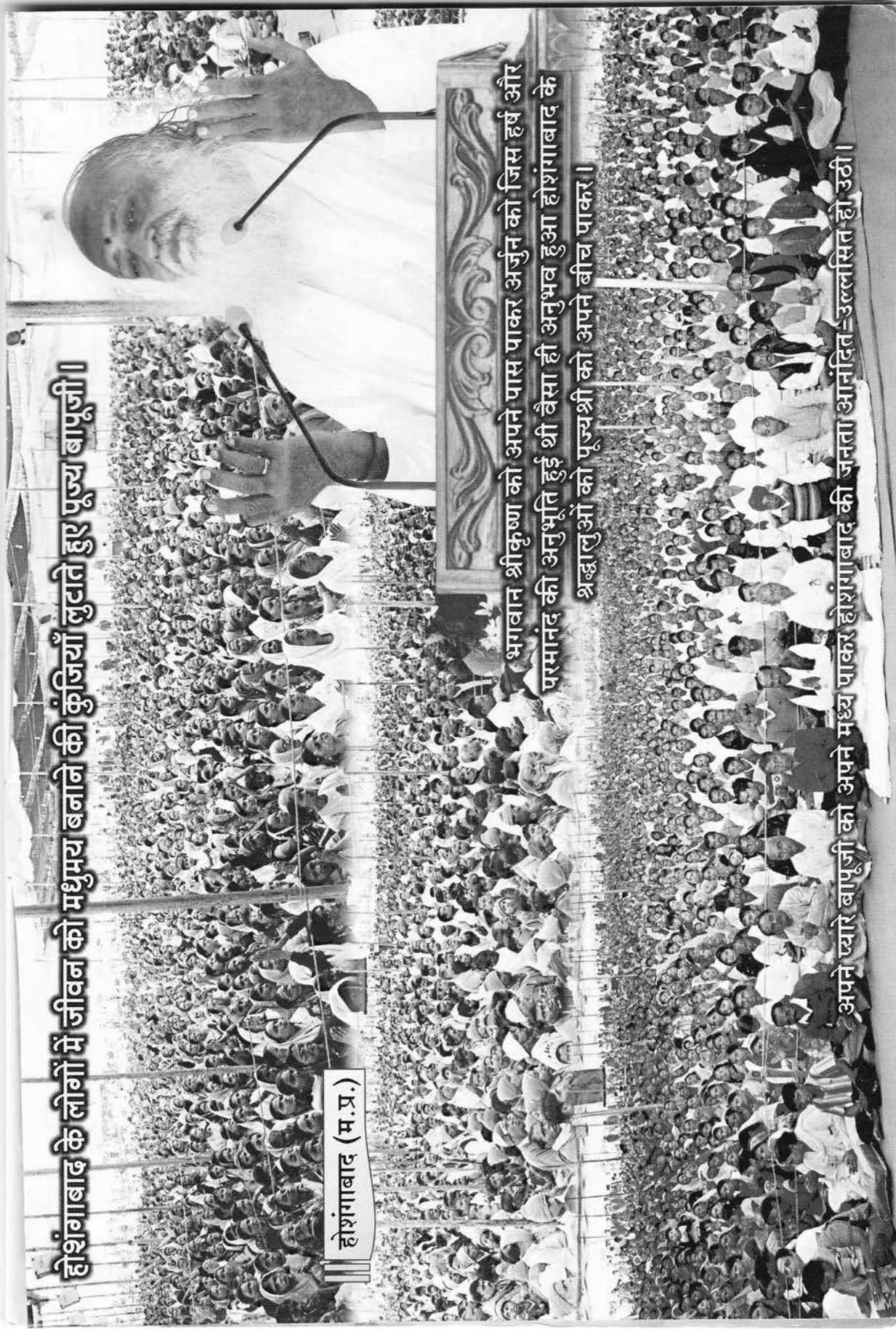
उज्जैन (म.प्र.) में उत्तरायण का पर्व, क्षिप्रा नदी का पावन तट और पतित पावन परम पूज्य गुरुवर के सान्निध्यरूपी त्रिवेणी में डुबकी लगाते लाखों सत्संगी ।

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-21/NW/2010
'D' No. MR/TECH/47.4/2010